अमृत जीवनी

संकलनकर्त्ता एवं प्रस्तुतकर्त्ता
डा. वी. के. सक्सेना
देवस्थली आश्रम
चकगंजा गिरी, लखनऊ

अमृत जीवनी

परम पूज्य लालाजी महाराज
की संक्षिप्त परन्तु गूढ़ जीवनी
प्रिय शिष्य परम संत श्याम लाल सक्सेना
गाजियाबादी द्वारा उनके जन्म शताब्दी 1973 के
अवसर पर लिखी एवं प्रस्तुत की गई का मूल रूप।

एवं

परम पूज्य चच्चाजी महाराज की संक्षिप्त जीवनी
एवं उनका उपदेश शतक

संकलनकर्ता एवं प्रस्तुतकर्ता
डा. वी. के. सक्सेना
देवस्थली आश्रम
चकगंजा गिरी, लखनऊ

विषय-सूची

क्र.	विषय	पृष्ठ
1.	दो शब्द	3
2.	परम पूज्य लालाजी महाराज द्वारा दीक्षित लोगों की सूची	7
3.	परम पूज्य लालाजी महाराज की तालीम एवं निर्देश	11
4.	परम पूज्य लालाजी महाराज के पावन शगल	13
5.	परम पूज्य लालाजी महाराज के अन्तिम शब्द अपने प्रिय शिष्यों के लिये	14
6.	परम पूज्य लालाजी महाराज की संक्षिप्त परन्तु गूढ़ जीवनी (प्रिय शिष्य परम संत श्याम लाल सक्सेना गाजियाबादी द्वारा उनके जन्म शताब्दी 1973 के अवसर पर लिखी एवं प्रस्तुत की गई का मूल रूप	17
7.	परम संत रघुबर दयाल उर्फ चच्चा जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय	45
8.	परम संत चच्चाजी महाराज के 'रघुबर चरितामृत' से उद्धृत उनका उपदेश शतक।	52

दो शब्द

यह छोटी सी पुस्तिका 'अमृत जीवनी' में एक विशाल महान संत चरित्र का सच्चा सीधा संक्षेप में इतना सुन्दर वर्णन है जो कहीं उपलब्ध हो पाना बहुत कठिन ही नहीं, मुझे तो असंभव सा लग रहा है। बड़ी-बड़ी पुस्तकों में वृहद स्थान होने से महान चरित्र को लिखने में कोई अधिक कठिनाई नहीं होती है, पर इतने गहन वृहद विषय को इतनी छोटी सी पुस्तिका में लिख पाना, लिखने वाले के चरित्र की महानता को दर्शाता है। यह वह ही कर सकता है जिसमें लिखने वाले के मानस पटल पर, जिसके बारे में लिखा जा रहा है, उसका पूरा चरित्र बहुत स्पष्ट हो। चरित्र के हर पहलू को छुआ गया है, चाहे वो परमार्थ का हो, चाहे उनके मिशन का हो, चाहे उनके महान सद्‌गुणों से सम्बन्धित हो, चाहे लौकिक परिवार एवं गृहस्थी से सम्बन्धित हो।

पुस्तक इतनी सारगर्भित है, इतनी प्रभावशाली है कि सीधा ह्रदय को छूती है। जब भी पढ़ी जाती है, नेत्र अश्रुपूर्ण हो जाते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों

महान संत आमने-सामने हैं। लगता है आराधना करने वाले ने अपने आराध्य को मंत्र-मुग्ध कर अपने सामने बिठा लिया हो और परत दर परत महान चारित्रिक विशेषताओं का अवलोकन करा दिया हो। पुस्तक अपने आप में पूर्ण, आधुनिक युग के पाठकों के लिये सर्वोपयोगी तथा गागर में सागर को भर लेने वाली विशेषता रखती है। लेखक एक ऐसे प्रेमी संत हैं जो अपने आराध्य का नाम लेते ही भाव-विभोर होकर नेत्रों में अश्रु भरे वाणी विहीन हो जाते थे, जैसे उनके उपर उनके गुरुदेव परम पूज्य लालाजी महाराज पूर्ण रूप से छा गये हों। मै ने ही नहीं, प्रत्येक व्यक्ति ने देखा है, जिनको उन्हें देखने का, सोहबत उठाने का सौभाग्य मिला है। जिसकी ऐसी अवस्था हो उसके वर्णन में, शरीर का रोमांचित हो जाना स्वाभाविक है।

यह छोटी सी पुस्तिका जो हम सबके लिये दर्शन है, वह पूज्य बाबू जी महाराज (परम संत डा0 श्यामलाल सक्सेना) द्वारा परमसंत परमपूज्य लालाजी महाराज के जन्म शताब्दी पर पढ़ी गई थी। ये अपने आप में एक दर्शन है। दर्शन है उस व्यक्तित्व का, जिसको हमें देखने का सौभाग्य नहीं मिला, पर इस प्रवचन ने हम सबको खुली आंख दर्शन लाभ करा दिया है।

इस प्रवचन को परम पूज्य स्व0 हर नारायण चाचाजी, जयपुर वालों ने एक छोटी सी पुस्तिका के

रूप में संकलित करा के सब परमार्थ प्रेमियों पर बड़ा उपकार किया है। ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि उनके नाम, यश तथा आत्मा को सदा गौरवान्वित रखें। हर नारायण चाचाजी हम सब से भी बहुत प्रेम करते थे और गाजियाबाद एवं लखनऊ के भण्डारों में दया करके सदा आते रहते थे। फतेहगढ़ भण्डारे में भी लोगों ने इनके दर्शन किये हैं। इन्होंने इस महान चरित्र को अंग्रेजी में अनुवाद कर के विदेश तथा दक्षिण भारतीय सत्संगियों को बहुत बड़ी नेमत प्रदान की है। इस नेक इन्सान ने ये नेक काम करके सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय को साक्षात् चरितार्थ किया है।

यह पुस्तिका अब लगभग समाप्तप्राय है। इस कारण मेरी एक बलवती इच्छा है कि इस पावन चरित्र को यथावत फिर से बड़े अक्षरों में नये आकर्षक रूप के साथ प्रस्तुत करूँ, जिससे सबको पुनः एक बार पूज्य बाबू जी महाराज द्वारा दर्शाये गये महान सन्त महात्मा रामचन्द्र जी, जो उनके सद्गुरुदेव थे, के दर्शन सुलभ हों।

यह कार्य सेवक स्वान्तः सुखाय हेतु कर रहा है। जिस समय आपने ये चरित्र पढ़ा था, उस समय फतेहगढ़ में सभी परम पूज्य लाला जी के हर सेक्ट के लोगों का समूह उमड़ के आया था। परम पूज्य बाबू जी महाराज यद्यपि पूज्य लाला जी महाराज के, उम्र में

सबसे छोटे शिष्य थे, लेकिन उस समय फतेहगढ़ भण्डारे में वही वरिष्ठ थे। 15-16 वर्षों का निकटतम सम्बन्ध अपने प्रभाव से सबको प्रभावित कर रहा था। सन्नाटा सा हो गया था। अधिकतर व्यवस्थाओं के अभाव के बावजूद भी वह प्रांगण, वह भण्डारा अकथनीय रहा। लग रहा था सब यंत्रवत स्वतः ही हो रहा है। भाई अखिलेश जी की शारीरिक स्थिति ऐसी थी कि वो अपने से हिल भी नहीं पा रहे थे। संयोजक-शून्य भण्डारा उनकी हस्ती से हो रहा था। सर्वत्र फैज, सर्वत्र खुशी, सर्वत्र भाई-चारा देखने योग्य था। मैं तो स्तब्ध था और अपने गुरुदेव के चरणों में नतमस्तक था और उनकी कही बात ''बेटे! अखिलेश थोड़े ही करेगें, काम तो लाला जी महाराज की हस्ती करेगी............................बेटे! मेरी बात सुन लो, समझ लो, समझ में न आये तो दस बार पूछो, फिर मैं जैसे कहता हूं, कर लो। विश्वास तब करना, जब अपनी आंखों से देख लो।''

देख लिया मैं ने उनका जल्वा, उनका कथन केवल इसी में नहीं, हर क्षेत्र में शत-प्रतिशत सच हुआ है, समय का जो भी अंतर हो।

सेवक

डा0 वी. के. सक्सेना

परम संत महात्मा रामचन्द्र जी सहाय (परम पूज्य लाला जी महाराज साहब) द्वारा दीक्षित लोगों की सूची

परम पूज्य लाला जी महाराज ने सन् 1915 में इस छोटे से शहर (जहां वो रहते थे) फतेहगढ़ में एक छोटी सी जमात एकत्र करके जो उनमें पूर्णतया समर्पित थी, उनको परमार्थ का अमीरस पिलाकर परमात्मा के प्रति समर्पण का भाव पैदा कर एक श्रेष्ठ मानव जिन सबको मानवीय गुण से पूर्ण कर एक सत्संग की नींव डाली। लोग थोड़े थे परन्तु बहुत गम्भीर और परमार्थ के प्रति पूर्ण समर्पित थे। उन्होंने स्वयं लिखा है कि "मेरी ये छोटी सी जमात बड़े-बड़ों का मुकाबला कर सकती है। यहां का तीन दिन का बैठा अभ्यासी दूसरे का कल्ब जाकिर कर सकता है।"

सूफी संत परम संत मौलवी फज्ल अहमद साहब रायपुरी के प्रिय शिष्य परम पूज्य लाला जी महाराज ने अपने इस सत्संग को संतमत की संज्ञा दी और यह रामाश्रम सत्संग के नाम से प्रसिद्ध है। उनकी इस छोटी सी जमात ने विश्व भर में एक इन्कलाब पैदा कर दिया है। आज ईश्वर की दया से भारत ही नहीं बाहर के देशों जैसे-अमेरिका, लंदन, आस्ट्रेलिया आदि जहां उनके

प्रिय अनुयायी है, वहां उन्होंने उनकी दी शिक्षा को प्रज्जवलित कर स्वयं भी ईश्वर की राह में चल रहे हैं और औरों के लिये भी मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। ईश्वर से एवं परम पूज्य लाला जी महाराज से प्रार्थना है कि वह उन्हें अपने प्रेम व आशीर्वाद से सच्ची दिशा प्रदान कर उनके जीवन को धन्य कर दे। बताया जाता है कि आपने कुल 31 लोगों को दीक्षा दी थी, जिनके नाम आपने एक रजिस्टर में दर्ज किये थे। अफसोस है कि आपके बिसाल के बाद कुछ अवांछनीय लोगों ने उस रजिस्टर को किसी स्वार्थवश गायब कर दिया, जिससे उनके द्वारा लिखित सूची न मिल सकी।

पूज्य गुरुदेव डा0 श्रीकृष्ण लाल जी सिकन्दराबादी एवं मेरे परम पूज्य बाबूजी महाराज डा0 श्यामलाल सक्सेना जी से एवं अन्य पुस्तकों के अध्ययन से जो नाम मैं एकत्र कर पाया हूं, उसकी सूची भाइयों की जानकारी के लिये लिख रहा हूं। पाठक बन्धुओं से निवेदन है कि इस दिशा में अगर किसी को किसी अन्य व्यक्ति की सूचना हो तो मुझे अवश्य बताने की कृपा करें। मुझे जो ज्ञात हो सके हैं, वो नीचे लिख रहा हूं।

1. परम पूज्य पंडित प्यारे लाल
2. डा0 श्री चतुर्भुज सहाय (एटा निवासी, हेडक्वाटर मथुरा)

3. डा0 श्री कृष्णलाल भटनागर (सिकन्दराबाद, बुलन्दशहर)
4. डा0 श्री श्यामलाल सक्सेना (गाजियाबाद)
5. डा0 श्री महेश्वर सहाय गंगवार (उज्जैन)
6. श्री प्रभुदयाल पेशकार (कौंच हेडक्वाटर कानपुर)
7. श्री भवानी शंकर जी (कौंच तथा उरई)
8. श्री अवध बिहारी लाल सक्सेना (बरेली)
9. श्री श्याम बिहारी लाल जी पोस्टमास्टर (फतेहगढ़)
10. श्री ठाकुर रामसिंह जी (जयपुर)
11. श्री मुंशी मदन मोहन लाल जी (शाहजहाँपुर)
12. श्री प्रेम नारायण दलेला (कासगंज़)
13. श्री सेवती प्रसाद मुख्तार (कासगंज)
14. श्री बल्देव प्रसाद वैद्य (फतेहगढ़)
15. श्री गिरवर कृष्ण भटनागर (दिल्ली)
16. श्री जगदम्बिका प्रसाद (हरदोई़)
17. श्री कृष्ण स्वरूप हितकारी (कानपुर)
18. श्री बलबीर सहाय जी (बुलंदशहऱ)
19. श्री पंडित मान सिंह जी (...........)
20. श्री प्रोफेसर राजेन्द्र प्रसाद (लखनऊ़)
21. श्री डा0 छोटे लाल (आगरा)
22. श्रीमती जिया माँ, धर्मपत्नी डा0 चतुर्भज सहाय जी
23. श्रीमती गोविंदा देवी धर्मपत्नी श्री अवध बिहारी लाल

नोट :- उपरोक्त लोगों में डा0 श्रीकृष्ण लाल भटनागर जी के 3 व्यक्ति उनके परिवार से थे-स्वयं वे, उनके भाई श्री गिरवर कृष्ण एवं बलबीर सहाय जी। डा0 श्याम लाल सक्सेना जी स्वयं व उनके दोनों बहनोई श्री प्रेम नारायण दलेला एवं श्री सेवती प्रसाद जी। श्री प्रभुदयाल पेशकार स्वयं व उनके भाई श्री भवानी शंकर जी।

जहा तक मैं आश्वस्त हूं उन्हीं के नाम दिये गये हैं। उनके सभी शिष्य अपने जीवन को सार्थक कर उनका काम यथा शक्ति कर, परमधाम को सिधार गये हैं।

अमृत जीवनी के लेखक
पूज्य लाला जी के सबसे कम आयु के शिष्य
पूज्य डा0 श्यामलाल सक्सेना जी
गाजियाबाद

❒❒❒

परम संत महात्मा रामचन्द्र जी सहाय (परम पूज्य लाला जी महाराज साहब) की पाक तालीम एवं निर्देश

1. गृहस्थ जीवन में रहकर, गृहस्थी के सब काम बहुत सुचारू रूप से करते हुए किसी वक्त भी ईश्वर (गुरु) की याद से खाली न रहे।

2. हक हलाल की कमाई का खाना खाये। खाना बहुत सादा हो (मिर्च-मसाला बहुत कम हो)। बनाने वाला शुद्ध विचार वाला हो। खाना स्वच्छता से बना हो। खाने की जगह साफ हो। यदि कोई मौजूद हो तो उसे खिलाकर खाये। सदा खाना खाने के पहले प्रार्थना करे। अपने गुरु को अर्पण करे कि उनका प्रकाश उस खाने में आ गया है। खाते समय दुनियां की बात न करे। कभी क्रोध या मन खिन्न हो तो ऐसी दशा में उस समय खाना न खाये। । मन की स्थिति ठीक हो तभी प्रसन्न मन से खाना खाये। खाने में यदि कोई त्रुटि या कमी हो तो भी खाना खाने के बाद ही बताये। खाना स्वास्थ्य-वर्धक होना चाहिये।

3. गैर जिन्स की सोहबत से परहेज करे। इससे उनका आशय यह है कि हर वह शख्स जो ईश्वर पर श्रृद्धा न रखता हो वह गैरजिन्स है। इनसे दूरी बनाये

रखें, चाहे वह अपनी औलाद या रिश्तेदार ही क्यों न हो।

4. सुबह उठने पर और रात में सोते वक्त सदा यह प्रार्थना करे कि " अल्लाहताला (हे ईश्वर) आपसे यह इल्तजा है कि आपने जो भी नेमते हमारे सिलसिले के बुजुर्गो एवं दुनियां के सभी संतों पर बख्शी है वो अपनी खास इनायत कर हमें भी बख्शे और हमारा अंजाम आखीरत हमारे सिलसिले के बुजुर्गो की तरह बा-खैर और बा-खबर हो।

5. अपने आपको मेटकर उसी में महब और लय हो जायें। इसी काम में अपने को मिटा दे। यही असल पद पर पहुंचने का यकीनी जरिया है। सबसे प्रेम करे।

6. अल्लाह ताला (ईश्वर से) प्रार्थना करे कि वह कर्जदार न भेजे (कर्जदार न रखे) और दुनियां के अपने सब फर्जयात पूरी करा दे। जिससे दुनियां से शर्मसार न जायें।

ओम शान्ति! शान्ति! शान्ति!

❑❑❑

परम संत महात्मा रामचन्द्र जी सहाय (परम पूज्य लाला जी महाराज) के समय के पावन शगल

1. दरूद शरीफ का जाप
2. शजरा पढ़ना (अपने सिलसिले का)
3. गायत्री मंत्र
4. चौमुखा जाप
5. प्रातः कालीन तथा सायंकालीन प्रार्थना
6. ओम शान्ति का जाप
7. ओम का जाप

नोट :- सभी शगल जितने भी हमारे बुजुर्गों ने बताये हैं, ''पूजा की विधि'' नामक पुस्तक में लिख दिये गये हैं। साधकों के लिये यह छोटी सी पुस्तिका बहुत उपयोगी है।

परम संत परम पूज्य लाला जी महाराज के अन्तिम शब्द परमार्थ से परिपूर्ण अपने प्रिय शिष्यों के प्रति

परम संत पूज्य लाला जी महाराज का विसाल 14 अगस्त 1931 को रात्रि में लगभग 1 बजे हुआ था। वह अपने पूरे होशो-हवाश में रहकर ईश्वर से मिलने के लिये पूर्ण रूप से तत्पर थे। उनकी तबियत खराब सुनकर उनके सभी शिष्य उन्हें देखने आ गये थे। आपने सबको बहुत प्रेम से आग्रह करके वापस कर दिया था। परम संत डा. श्रीकृष्ण लाल सिकन्दराबाद वाले तथा परम संत डा. श्यामलाल सक्सेना जो आपको देखने आये थे, उन्हें वापस कर दिया गया कि चले जाओ तुम्हारे बहनोई की तबियत ठीक नहीं है और परम संत श्यामलाल सक्सेना से भी कहा कि तुम भी चले जाओ, इनको सहुलियत हो जायेगी। आँखों में आँसू भरे हुए वे लोग लौट गये। आपने अपने छोटे भाई (जिन्हें वे सबसे अधिक प्यार करते थे) परमपूज्य चच्चाजी को भी दूसरे कमरे में जाने को कह दिया। ये कहकर कि ''नन्हें मैं मनुष्य हूं, कहीं आखिरी वक्त मेरे ख्याल की धार (अटूट प्रेम के कारण) तुम्हारी तरफ न चली जाये।

कितना एहतियात हमारे बजुर्ग करते थे। आपने इसी क्रम में परमपूज्य बाबू बृजमोहन लाल जी साहब को भी बाहर कर दिया। उनको बहुत विह्वल देख आपने उनसे कहा कि ये समय विह्वल होने का नहीं है, दुआ करने का है।

परम संत हाजी मौलवी अब्दुलगनी साहब जब उनसे मिलने आये तो आपने उनसे पूछा कि उनको किसी प्रकार की चिन्ता तो नहीं है। आपने बड़े अदब से उनको सलाम करते हुए कहा था "मुझे कोई फिक्र नहीं है, बुजुर्गान सिलसिले को अपने साथ अपने पास देखता हूं, बस एक फिक्र जरूर है कि जिन चन्द लोगों के हाथ मैं ने मजबूती से पकड़े हैं, कहीं शैतान उन्हें मुझसे छुड़ा न ले। उन्हीं के लिये पीराने-उज्जाम से दुआ करता हूं, वो मेरी दुआ कबूल करें।" इतना कहकर वे चुप हो गये और गहन समाधि में चुप-चाप लेट गये।

उस समय के लोग बताते हैं कि जैसे ही आपने अपना पार्थिव शरीर छोड़ा, परमपूज्य चच्चाजी महाराज बेसुध होकर दौड़कर उस कमरे में आये और सभी लोग विह्वल और व्याकुल हो गये। आपने अपने अन्तिम क्षणों में जिस प्रकार अपने प्रियजनों का ध्यान रखा, ये परमार्थ का उत्कृष्ट और ज्वलंत उदाहरण है। इसी गुण

के कारण किसी संत कवि ने कहा है- ‘‘परमार्थ के कारणे संतन धरा शरीर।’’

संतों का पूरा जीवन निःस्वार्थ निष्काम केवल दूसरों के हित के लिये ही होता है। यही सब तो उनके जीवन की दिव्यता है।

ओम शान्ति! शान्ति! शान्ति!

❑❑❑

अमृत जीवनी

फतेहगढ़
16.1.1973

बुजुर्गों और प्रिय बन्धुओं,

आज हम एक महान आत्मा की जन्म शताब्दी मनाने को इकट्ठे हुए हैं। आज का वह शुभ दिन था जब आपका जन्म हुआ। यह शुभ दिन बसंत का दिन है। और भी कई सन्त बसंत के दिन पैदा हुए हैं। यह संतों में बहुत मुबारक दिन समझा जाता है।

आप का नाम मुंशी राम चन्द्र साहब था। हम लोग अखलाकन और प्रेमवश 'लाला जी महाराज' कहा करते थे। आपके वालिद बुजुर्गवार का नाम चौधरी हरबख्श राय था। चौधरी हरबख्श राय साहब फर्रूखाबाद में चुंगी के सुपरिन्टेन्डेन्ट थे। आपके बुजुर्गवार इस इलाके के सबसे बड़े रईस बल्कि छोटे से राजा कहलाते थे। मैं ने आपका कदीमी मकान कस्बा भोगांव- जिला मैनपुरी में देखा है जिसमें फाटक से हाथी सीधा मकान में घुस जाता है। आपके कुछ अरसे तक औलाद नहीं हुई। आपकी धर्मपत्नी बड़ी ही ईश्वर

भक्त थीं और रामायण की बड़ी जबरदस्त प्रेमी। कई साल तक औलाद न होने से तबियत कुछ खुश नहीं रहती थी। जो हमने उस वक्त माता जी (जिज्जी) से सुना वह यह है कि एक रोज मज्जूब फकीर दरवाजे पर भिक्षा मांगने आया। उस मज्जूब फकीर ने मछलियां खाने की ख्वाहिश जाहिर की। चारों तरफ मछलियां तलाश की गईं। इत्तफाक से दो मछलियां नवाब शम्साबाद ने चौधरी साहब के लिये उसी रोज भेजी थीं। वही आपकी नौकरानी को मालूम था। उसने चौधरी साहब की धर्मपत्नी से कहा कि आज नवाब साहब के यहां से सुबह दो मछलियां चौधरी साहब के लिये आयी हैं। अगर आप इजाजत दें तो मैं वो दोनों मछलियां मज्जूब साहब के लिये ले आऊँ। आपने फौरन इजाजत दे दी। नौकरानी पुरानी थी और रईसों की नौकरानियां आम तौर से जरा गुफ्तगू करने में शाइस्ता और मौके की बात करती हैं। मज्जूब साहब को खुश देखकर अर्ज किया कि दुआ कीजिये कि हमारे चौधरी साहब के अभी कोई औलाद नहीं हैं और उनकी धर्मपत्नी को भी इसका अहसास है। आपने खुश होकर दुआ की और चले गये। वक्त आने पर आपके वतन से दो लड़के लालाजी महाराज मुंशी रामचन्द्र साहब और चच्चाजी महाराज मुंशी रघुबर दयाल साहब हुए। कोई इनको राम-लक्ष्मण की जोड़ी बतलाता था लेकिन आपके प्रेम और

अखलाक को जो मैंने देखा तो मैं इन्हें राम और भरत की जोड़ी कहूंगा। ?

बड़े भाई मुंशी रामचन्द्र साहब का जन्म 2 फरवरी 1973 बसंत पंचमी के दिन फर्रूखाबाद में हुआ। जैसा कि ऊपर जिक्र आया है-आपकी माता जी रामायण की बड़ी भक्त थीं, आप फरमाया करते थे कि पहली भक्ति की किरण रोशनी मेरी परम भक्त माता ने मेरे कानों में फूंकी और वह अवसर आपको सात साल तक मिला। आप जब सात साल के हुए तो आपकी माता जी का स्वर्गवास हो गया। आप और आपके छोटे भाई चच्चा जी महाराज मुंशी रघुबर दयाल साहब की परवरिश अकेले चौधरी साहब ने की। आप भी दोनों भाईयों की शादियां करके सन् 1893 में परलोक को सिधार गये। आपने अंग्रेजी मिडिल पास करके कलेक्टरी फतेहगढ़ में दस रूपये महावार पर नौकरी कर ली। वालिद साहब के स्वर्गवास होने पर दोनों गृहस्थियों का भार आप पर ही रहा। आप गंज में घुमना बाजार के करीब जब हम लोगों को साथ लेकर जाया करते थे और दिखलाया करते थे कि पहले हम यहां रहते थे। इस मकान में जगह कम थी, इसलिये अपने पास ही मदरसा मुफ्ती साहब में एक कोठरी अपने पढ़ने और रहने के लिये अलहदा ले ली थी। इस मदरसा से ये बिल्कुल मिली हुई दूसरी कोठरी में एक बड़े महात्मा

जिनका मुबारक नाम मौलाना फज्ल अहमद खां साहब (रहमतुल्ला अलैहि) था, रहते थे। स्वामी ब्रह्मानन्द जी, जिनकी उस वक्त काफी उम्र थी, आपको फर्रूखाबाद के कुतुब कहा करते थे। आप रहने वाले मौजा रायपुर थाना कस्बा कायमगंज जिला फर्रूखाबाद के थे और उस कोठरी में बासिलसिले मुलाजिमत मदरसा मुफ्ती साहब में रहते थे। स्वामी ब्रह्मानन्द साहब से आपका अक्सर सत्संग रहा करता था। आप बड़े ही दयालु, उदारचित्त, बेलौस और बेतास्सुब थे, जिनकी सैकड़ों मिसालें हैं। उदारचित्त की एक मिसाल इन अलफाजों में बड़ी सहूलियत से मालूम हो सकेगी। आपने लाला जी महाराज को जब तालीम के लिये बुलाया तो फरमाया कि मेरा मिशन जहां तक हो सके भूले-भटके लोगों तक पहुंचाओ और जब तक लोगों की आन्तरिक जागृति नहीं होगी, उस वक्त तक अखलाक दुरूस्त न होगा। आपके पीर हजरत किब्ला मौलवी अहमद अली खां साहब रहमतुल्ला अलैहि मऊ रशीदाबाद जो कायमगंज का एक मोहल्ला ही है, रहते थे। आप भी एक कुतुब थे। नक्शबन्दिया मुजद्दिया मजहरिया आप सारे खानदानों से फैजयाब थे और जैसा शिष्य देखते थे वैसी ही तालीम का तरीका अख्तियार करते थे। कस्फ बहुत ऊंचा और दीन और दुनियाबी निस्बतों पर कादिर था। इसकी दो मिसालें पेश हैं।

एक मर्तबा आपने दोनों मौलवी फज्ल अहमद खां साहब और मौलवी अब्दुल गनी खां साहब ने उर्दू मिडिल का या नारमल का इम्तहान दिया। कुछ परचे खराब हो गये। हजरत किब्ला मौलवी अहमद अली खां से जिक्र आ गया। आपने फरमाया-तुमने नहीं पढ़ा और लिखा तो मैं ने तो पढ़ा और लिखा है। नतीजा आने पर दोनों साहब पास थे। आपकी कुब्बत की शान ही शान थी।

दूसरी मिसाल जब आप पैसे की तरफ से ज्यादा दुखी हुए और दो-तीन रोज मय बच्चों के तकलीफ उठायी- उस वक्त फिर आप से जिक्र आ गया। आपने पूछा कि फज्ल अहमद खां आप का गुजर कितने रूपये माहवार में हो सकता है? अर्ज की कि दस रूपये माहवार में हो सकता है। फरमाया कि हमने तो तुमको एकम तारीख से दस रूपये माहवार पर मुलाजिम कर दिया। उस रोज महीने की चौदह तारीख थी। आपको दिल में ख्याल हुआ कि आज तो चौदह तारीख है और ये फरमा रहे है कि मुझको एक तारीख से मुलाजिम किया। ये कैसे मुमकिन है? वापसी में जब आप कायमगंज से रायपुर जा रहे थे, रास्ते में नवाब साहब शमसाबाद मिले और फरमाया कि मौलवी साहब हमारे दोनों बच्चों को आप कल से पढ़ाया करें, आपने मंजूर

कर लिया। जब एक तारीख को तनख्वाह मिली तो पूरे माह के दस रूपये। आपने फरमाया कि मैं ने तो फलां तारीख से काम करना शुरू किया है। नवाब साहब ने फरमाया-हमारे से तो आपको एक से ही तनख्वाह मिलेगी। वापिस आने पर अपने गुरूदेव से जिक्र किया, फरमाया, फज्ल अहमद खां, तुम्हारा जैसे शिष्य को मेरे अलफाजों पर पूरा यकीन नहीं हुआ। मुसीबत इन्सान को पूरा यकीन लाने से रोकती है।

रायपुर वाले मौलवी साहब की सैकड़ों मिसालें हैं। आपने सैकड़ों भूले-भटकों को परमारथ का रास्ता दिखलाया। लाला जी महाराज के हालात के साथ साथ वो मिसालें भी आगे आवेंगी। ये जिक्र सब इसलिये कर दिया गया कि लोग लाला जी महाराज के साथ-साथ अपने दादा पीर और दीगर सन्तों को भूल न जायें, क्योंकि इस सिलसिले की बरकत ही सन्तों की दया पर आधारित हैं।

जहां तक मुझे मालूम है सन् 1891 में लाला जी महाराज का परिचय अपने गुरूदेव से हुआ और वह इस तरह कहा जाता है कि आप एक रोज बारिश में फतेहगढ़ से वापिस आते वक्त बहुत भीग गये थे और सरदी से कांप रहे थे। मौसम भी सरदी ही का था। जब उस कोठरी की तरफ से निकले तो आपने फरमाया कि

बर्खुरदार अगर कुछ मुजायका न हो और तआम्मुल न हो तो यहीं आराम कर लो, मैं अंगीठी तैयार कर रहा हूं और जिस्म को जरा सेंक लग जायेगा, सरदी का असर दूर हो जावेगा। और कहा जाता है कि वह अलफाज आपके जादू भरे थे। आपने अर्ज की कि मैं भीगे कपड़े उतार कर अभी आया। कपड़े उतारकर आप वहां पहुंचे। इस बीच में आपने अंगीठी खूब गरम कर ली थी, हाथ पैर सेंके। आपने अपने ओढने की रजाई आपको उढ़ा दी। अक्सर जिक्र आने पर फरमाया करते थे कि न मालूम मुझको कितना आनन्द उन कपड़ों में मालूम हुआ। गालिबन प्रेम का सौदा उसी वक्त हमेशा के लिये ही हो गया। और गायबाना तालीम आपकी चलती रही। और बाकायदा दीक्षा 23 जनवरी 1896 को 5 बजे शाम को दी और 11 अक्तूबर 1897 को गुरू पदवी प्रदान की और दक्षिणा ये मांगी कि जैसे मालिक के नाम पर आपके साथ मालिक की ओर से किया गया है, वैसे ही आप भी दुखी और दीन प्राणियों का उपकार और उद्धार निष्काम भाव प्रेम से और निःस्वार्थ भाव से किया करेंगे। मखदूम यानि स्वामी बनने की चेष्टा न करे, बल्कि जमाने की रफ्तार को देखकर खुद सेवा का भाव रखकर परमात्मा की जानिब से अपने आपको चपरासी और दरबान समझकर उपकार करें। जमाना बहुत नाजुक है और लोगों में इतनी कमजोरियां पैदा हो

गई हैं कि संस्कार और इच्छा रखते हुए, आन्तरिक साधन अपने आप साध नहीं सकते। इन बेचारों को ऐसी सेवा की बड़ी आवश्यकता है। मतलब ये था कि आप खुद आने वालों की सेवा करें और अपनी सेवा कराने की कोई इच्छा न रखें। और सारी जिन्दगी आपने इसी आइडियल को लेकर उनके मिशन का काम किया। हम लोग सब बच्चे थे और वो बुजुर्ग, कभी अपनी धोती हम लोगों से साफ नहीं करायी। और कोशिश ये करते थे कि पानी तक खुद भरकर अपने घर के कुएं से अपने नहाने का इन्तजाम करते थे। और जब कभी हम लोग कहा करते थे कि साहब हम ये काम करे देते हैं तो फरमाया करते थे कि मैं कोई कुबड़ा थोड़े ही हूं। बगरज बेगरजाना मोहब्बत का बीज और स्वामी न बनने का बीज आपने हम सब में शुरू से ही डाल दिया था।

जब तक आपकी पोस्टिंग कायमगंज रही, उस वक्त तक बिना नागा कायमगंज से रायपुर जो करीब साढ़े तीन मील है, जाया करते थे। एक रोज बड़े जोर से आंधी और बारिश आई और ये मालूम होता था कि तूफान है। आपको जब कुछ नहीं दिखा तो आप एक दरख्त (पेड़) के नीचे खड़े हो गये। और जब तूफान कुछ कम हुआ तो रवाना हुए। लुत्फ ये था कि आंधी थी लेकिन आप खुद सूखे थे और न उस दरख्त के नीचे

एक बूंद थी। आपने कहा तुमको आंधी और तूफान भी हमारे पास आने से न रोक सका।

एक मर्तबा आप बहुत बीमार हो गये और मरज गठिया था, और चल फिर नहीं सकते थे। बिल्कुल उठने-बैठने से मजबूर हो गये। जब जरा होश हुआ तो एक पालकी करके आप वहां पहुंचे, फरमाया-बेटे! बहुत तकलीफ उठायी और ये दोहा पढ़ा-

देह धरे का दण्ड है सब काहे को होय।
ज्ञानी भोगे ज्ञान से, मूरख भोगे रोय।।

वापिस आने पर तबियत बिल्कुल साफ थी।

एक मर्तबा, आप कहीं गालिबन तहसील अलीगढ़ में थे, आप सोचा करते थे कि जब कोई जरूरत और तकलीफ होगी तो मेरे इतने सत्संगी हैं, मुझे मदद करेंगे। वक्त पर कोई झांका तक नहीं। सोचे कि सिवाय परमात्मा के जो मदद का दूसरों से ख्वाहिशगार हुआ तो ये नतीजा निकला, और अपने गुरूदेव को भी रायपुर लिखा और जलसा खराब होने की शिकायत की। फरमाया कि भाई! जमाना इसी तरह का हो गया। अगर वो हमारा साथ नहीं देते तो हमीं उनका साथ दें।

आप खुद फरमाया करते थे कि आप एक मर्तबा जब मैं हाजिर खिदमत हुआ तो आप कुछ पानी से खेल

रहे थे और पानी से सारे जिस्म को, छींटा दे-देकर तर कर रहे थे। जैसे ही मैंने सलाम पेश की, ख्याल हुआ कि इस वक्त यहां रूकना मुनासिब नहीं, मैं वापिस हो गया। जब अगले रोज फिर पहुंचा तो बहुत खुश थे और फरमाया पुत्तूलाल! (आपको हजरत पुत्तूलाल ही कहा करते थे) कि इतने अरसे में तुमने हमको कोई मौका नाखुश होने का नहीं दिया। उस वक्त मैं यही चाहता था कि मेरे पास कोई नहीं आवे और तुम मेरा रूख देखकर फौरन वापिस चले गये।

आप जुबाने-मुबारक से फरमाया करते थे कि हमारे सब सत्संगी भाई अक्सर आपके पैर दबाया करते थे, लेकिन हमारी कभी हिम्मत न पड़ी कि आपके पैर दबावें। कहा करते थे कि हमको डर लगा रहता था कि हमारे हाथ इस कदर सख्त हैं और आपके पैर इतने नाजुक, कि कहीं हमारे सख्त हाथों से आपके पैरों को तकलीफ न हो जावे।

अक्सर सत्संग में जिक्र रहा करता था कि एक बुजुर्ग मौजा भौजपुर जो फतेहगढ़ से नजदीक ही है, आपसे बड़े ही तपाक से मिला करते थे, लेकिन उनकी आदत थी कि जो दूसरों के पास परमार्थ की कमाई होती थी, उसको खींच लेते थे और बगलगीर होने की बहुत कोशिश करते थे। चूंनाचे जब आप अपने गुरूदेव

के यहां जा रहे थे, बड़े ही तपाक से बगलगीर हुए और वो अपने घर चले गये और ये अपने गुरूदेव के यहां चले गये। उन बुजुर्ग के उस रोज से सीने में दर्द हुआ कि कई रोज तक सबका इलाज हुआ, लेकिन कुछ फायदा न हुआ, तो मजबूरन उन्होंने सबसे खोलकर कहा कि मेरा इलाज सिवाय मो0 फज्ल अहमद खां के कोई न कर सकेगा। चूनाचे लोग आपको पालकी में डालकर मौलवी साहब के पास ले गये। पहुंचते ही आपने फरमाया कि आपके साहबजादे मुंशी रामचन्द्र फतेहगढ़ वालो ने मेरा सब कुछ छीन लिया और मेरे बहुत दर्द है। आपने फरमाया कि वो तो बड़े खलीक लड़के हैं, ऐसी हरकत उनसे मुमकिन नहीं है, कुछ धोखा हुआ होगा। इत्तफाक से इतनी देर में लाला जी महाराज पहुंच गये। आपने कहा कि ये साहब ऐसा कहते हैं। जबाब दिया कि मैं तो कुछ जानता ही नहीं हूं कि कैसे दूसरों की परमार्थ विद्या खींचते हैं। तब हजरत ने खुद फरमाया कि जनाब ने खुद ये कोशिश की थी, कि उनका सब कुछ खींच लूं, लेकिन हो गया उल्टा। जाइये, आइन्दा ऐसा न करना।

भाइयों ये एक विद्या है जो अक्सर सन्त या फकीर दूसरों को नुकसान पहुंचाने के लिये ऐसा करते हैं। अगर अपने गुरूदेव में शिष्य पूरी तरह से लय नहीं

हैं तो थोड़ी देर के लिये नुकसान उन्हें विद्या में पहुंच सकता है। भाइयों को हर तरह से दूसरे लोगों से मिलने में एहतियात की जरूरत है। एक परमहंस जी बिहार की तरफ बड़े ही अच्छे बुजुर्ग गुजरे हैं। उनको भी वृन्दावन की यात्रा में ऐसे ही एक दूसरे सन्त से थोड़ी तकलीफ पहुंची थी, और उन्होंने भी यही लिखा है कि हर शख्स से सीने से सीना अभ्यासी को कभी नहीं मिलाना चाहिये।

एक मर्तबा इससे पहले भी ये बुजुर्ग मौलवी साहब को फर्रूखाबाद स्टेशन पर मिले। कहा हुक्का पी लीजिये। फिर अगले स्टेशन पर गाड़ी पहुंचने से पहले पहुंच गये और हुक्का पेश किया। दो-तीन मर्तबा तो आप न बोले। चौथी मर्तबा उनसे कहा कि अच्छा! अब अगले स्टेशन पर आप न पहुंच सकेंगे। सुना है कि उनको हवा में उड़ने की महारत थी और आपको ये दिखलाना चाहते थे कि हम ऐसा कर सकते हैं। अक्सर बुजुर्ग ताकत रखते हैं, लेकिन दूसरों को दिखलाना नहीं चाहते हैं और अक्सर उस ताकत का गलत इस्तेमाल कर जाते हैं। अगर पीर में कामिल फनाइयत नहीं हैं यानि अपने गुरू में पूर्ण रूप से लय नहीं हैं तो धोखा होना मुमकिन है।

एक मर्तबा आप व हमराही लाला जी महाराज रायपुर से कायमगंज जा रहे थे। रास्ते में एक औरत मिली जो बिल्कुल नंगी थी और चारों तरफ उसके हुजूम था और उसको नंगा देखकर लोग परेशान थे। कुछ देर तो आप खामौश रहे और बाद में कुछ पढ़ा और बड़े जोर से आवाज आई कि मुझे जलायें नहीं, मैं अभी इस औरत को छोड़ता हूं। ख्याल ऐसा है कि कोई गलत रूह उस औरत को परेशान किया करती थी।

दो-एक मर्तबा जिक्र आया कि एक सुनार साहब थे, वे बिल्कुल ही नास्तिक थे। परमात्मा की हस्ती के कायल नहीं थे। जब सुनार साहब का आखिर वक्त आया तो दुविधा में पड़ गये और मौलवी साहब को बुलवाया। कहने लगे- मोलवी साहब! मैं परमात्मा की हस्ती का कायल नहीं था, कहीं इस वजह से तो ये तकलीफ नहीं है? फरमाया-भाई! इन चीजों की बहस के लिये वक्त नहीं है, जो ख्याल बांध रखा है, वही ठीक है और आप अपनी हिम्मत आली से उनकी तरफ मुखातिब हुए और कामयाब हुए।

अक्सर जिक्र आया कि एक मज्जूब बुजुर्ग फर्रूखाबाद में रहा करते थे। एक मर्तबा कायमगंज वाले मौलवी साहब मुंशी अहमद अली खां जिन्दा थे, आपका गुजर उधर से हुआ तो आपने उस मज्जूब को

कुछ छेड़ दिया। वो भी एक बहुत उच्च कोटि के महात्मा थे, कुछ फील कर गये। आप फरमाते थे कि ये हालत थी कि जैसे कोई चक्की की तरह मेरे सीने को दल रहा है। मैं ने फौरन ही अपने पीर की याद की तो बुजुर्ग फरमाने लगे कि तुम्हारे गुरूदेव बीच में मदद को न आ जाते तो मैं तुमको बिना कुछ किये छोड़ता नहीं। ये घर वापिस चले आये। जैसे ही बड़े मौलवी साहब के सामने आये, फरमाया-दूसरे बुर्जुगों से छेड़खानी मुनासिब नहीं। लालाजी महाराज ने लिखा भी है और अक्सर कहा करते थे कि अपने यहां के बुर्जुगों का कसूब बहुत जबरदस्त है और अक्सर मिसाल दिया करते थे कि एक मर्तबा आप किसी साहब के यहां गये और फरमाया-इस जगह पर फलां साहब अभ्यास करते हैं और यहां पर फलां साहब।

जब आपका वक्त वापसी अपने निज धाम को हुआ तो सबको इकट्ठा करके कहा कि रंज और अफसोस की जरूरत नहीं। मैं इस जिस्म की कैद से आजाद होकर तुम्हारी मदद इससे भी ज्यादा कर सकूंगा। और आखिरी सांस तक सबको फैजयाब किया। आपकी रूह-पाक आज तक सबको मदद करती है। जैसा एहसास इस सिलसिले के साहेबान महसूस करते हैं और करते रहेंगे।

जब पीर यानि गुरू में पूर्ण लय अवस्था होती है, तब तक परमार्थ भी अच्छी होती है और साथ ही साथ दुनियां की मुसीबतें भी सहूलियत से कट जाती हैं और आसानी से कोई गलत ख्याल का आदमी न आपको नुकसान पहुंचा सकता है, और न आपकी तरफ बुरी निगाह ही डाल सकता है। आपके गुरूदेव हर वक्त सहायता करते हैं। और उससे ऊपर के बुजुर्ग हर वक्त साये की तरह आपकी रक्षा करते हैं। इस भेद को वो लोग ज्यादा अच्छी तरह समझ सकेंगे जो इस स्टेज से पार हो चुकें हैं।

लालाजी महाराज फरमाया करते थे कि मैं ने गुरूदेव में मुक्कमिल फनाइयत यानि लय अवस्था 24 घण्टे में प्राप्त की। और वाकया ये फरमाया कि वो जमाना जब आपकी शादी हुई, ऐसा था कि रण्डियां बारात में जाती थी और नौशा यानि दूल्हा बीच में बैठाया जाता था और रण्डियां नाचा करती थी और दूल्हा की तरफ बार-बार मुखातिब होकर मोशन (इशारा) करती थी। आप मजबूरन ब हुकुम अपने वालिद साहब महफिल में बैठ गये। लेकिन ख्याल हर लम्हा अपने गुरूदेव का था। नतीजा ये हुआ कि 24 घण्टा मुतवातिर पीर का ख्याल करते रहे और गुरूदेव में लय अवस्था को प्राप्त किया।

एक और वाकया शुरू में ही गुजरा। जब आप अपने गुरूदेव के कदमों में हाजिर हुए तो बतौर पिकनिक और सब लोग जो आपके दफ्तर के साथी थे, वो भी घटिया घाट पर गये। वहां सबने भांग घोटी। आपके एक खास मित्र दोस्त पण्डित मातादीन थे। सबने भांग पी और आपसे भी इसरार किया कि भांग पी लो। आपने इनकार कर दिया। लेकिन सबने मिलकर गिराकर भांग पिलाना चाही और पण्डित मातादीन आपकी छाती पर सवार हो गये और जबरदस्ती मुंह में डालना चाहते थे कि आपकी शक्ल बिल्कुल आपके गुरूदेव की हो गई और पण्डित मातादीन ने महसूस किया कि ये कोई और साहब हैं। वो फौरन ही घबराकर उतर गये और सारा वाकया सब साथियों को सुनाया। वो लोग भी घबराये और सबने आपको भांग पिलाने से खामोशी अख्तियार की। इस वाकये का जिक्र स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज से भी आया और फिर पण्डित मातादीन दीन भी आपके साथी और आपके सत्संगी बने।

लाला जी महाराज ने अपना मिशन फतेहगढ़ में सन 1915 में शुरू किया। दो-एक परिचय ये भी मिलता है कि शुरूआत और परमार्थ का बीज फतेहगढ़ में सन् 1911-12 में जब आप राजा साहब तिरवा की कोठी में

थे, उस समय ही पड़ गया था। लेकिन जो खास शुरूआत हुई वो सन् 1915 के शुरू साल में ही हुई और पण्डित प्यारेलाल साहब और माताचरण साहब ही पहले लोग थे। परमात्मा इन दोनों हमारे भाइयों की आत्मा को हर तरह से शान्ति दें। बड़े ही प्रेमी और Sacrifice करने वाले लोग थे। तीन-चार माह के अन्दर ही हम सब लोग आ निकले और एक प्रेम की वर्षा हर तरह से होने लगी। जिन्होंने वो वक्त देखा है, वो लोग अक्सर, यह पढ़कर सब्र कर लेते हैं कि जो देखा सो ख्वाब था, जो सुना सो अफसाना था।

आपकी तालीम लुब्बेलुआब प्रेम और सेवा था। तीन-चार माह के अन्दर ही सबको ऐसे प्रेम के सूत्र में बांध लिया कि एक आदमी भी फिर वहां से नहीं हटा। हम लोग छोटे-छोटे थे, तब यहां से कुछ फासले पर पतंगों का एक मेला लगता था। आप हम सबको साथ ले जाते,कहते, चलो तुम सब को मेला दिखला लावें और जब वहां जाते तो दो-दो पैसे अपने पास से सबको मेलें में कुछ खाने के लिये देते। ये प्रेम था और जीवन भर यही प्रेम सब के साथ निभाया। किसी को जरा सी तकलीफ हो जाती तो हर तरह से खाने व दवा का सब इन्तजाम खुद अपने खर्चे से करते और दूसरे की तकलीफ को अपनी जाती तकलीफ समझते थे।

एक मर्तबा भाई साहब बाबू प्रभु दयाल साहब को दिल का दौरा पड़ा। मैं यहां ही आया हुआ था। कहने लगे कि जल्दी से चलो, उनका सब इन्तजाम करना है। जब पहुंचे तो उनको तकलीफ ज्यादा थी। कहने लगे-तुम यहां ही इनके पास ठहर कर ःूंजबीद्ध वाच करते रहो, मैं दूसरे डाक्टर को बुलाकर लाता हूं। वो पुराने आदमी हैं और इनके मिजाज से वाकिफ है। जब तक पेशकार साहब की हालत बिल्कुल ठीक नहीं हो गई, उस वक्त तक वे वहां से उठे नहीं। आप कहा करते थे कि अगर तुम्हारे पास शाम को रूपया है और तुम्हारे दोस्त को जरूरत है और तुमको उस रूपये की जरूरत सुबह को है तो ईश्वर का भरोसा करके उसको दे दो। तुमको ईश्वर सबेरे बहुत देगा। दोस्त का काम उस वक्त निकाल दो।

आये दिन कुछ न कुछ ऐसी अदभुत् बातें हुआ करती थी कि हर शख्स मानूस ही हो गया। बहनों में से एक बहन की शादी थी। हम ही सब लोग मुन्तजिम थे। ख्याल हुआ कि खाने का सामान कुछ कम पड़ जावेगा। फरमाया- सब खाने पर चादरें डाल दो और ईश्वर का नाम लेकर खिलाते जाओ। सब घर के और बारात के लोग खाना खा गये, लेकिन सामान सब फिर भी बाकी बच गया।

अगर दो-तीन प्रेमी भाई एक जगह होते और एक कोई अपनी खैरियत का खत लिखता और दूसरे का हाल न लिखता तो फील ;मिमसद्ध करते थे कि एक जगह होकर एक-दूसरे का हाल न लिखते हो, ये क्या मोहब्बत है।

सन् 1919 तक सत्संग काफी जड़ पकड़ गया था। इसी बीच में शाम को खास तौर से हर रोज बराबर सत्संग चलता था। उधर चाचा जी महाराज अलीगढ़ से आ जाते और वो सारी रात ही बैठे रहते थे। तालीम का भार ज्यादातर अपने ऊपर ही रखा। बल्कि चाचाजी महाराज से फरमाया करते थे कि नन्हें (चाचा जी महाराज का घर का नाम नन्हें था) ये दस बीस आदमी मैंने अपने प्रेम से पाले हैं, लेकिन तुम्हारी तपस्या और रियाजत देखकर ये लोग भाग न जायें।

एक बार भोगांव में उर्स था और वो अभ्यासी मौजूद थे कि जिनको देखकर मैं दंग रह गया। सुबह 6 बजे से उन्होंने जिस आसन को लिया, उस आसन को 2 बजे तक बदला ही नहीं। आपने इसमें औतार समझाये थे, वो लोग हक्के-बक्के से रह गये और कहा कि इस तरह कोई समझाये तो कोई समस्या ही न हो। आपने एक छोटी सी किताब में लिखा था- हो सकता है कि आप की मक्तूबात में कोई मिल जावे। भोगांव वाले

मौलवी साहब से जब सब लोगों ने मिलकर ये सब कहा तो आप फरमाने लगे कि न मालूम कि हमारे भाई साहब ने मुंशी जी में क्या भर दिया, जिसकी थाह आज तक नहीं मिली।

आपके कस्फ का भी ये हाल था कि एक मर्तबा मैं दिलदार नगर जिला गाजीपुर था, मुझको लिखा कि मैं दो-तीन रोज के लिये तुम्हारे पास आऊंगा। जो तारीख मुकर्रर थी, उस पर आप नहीं पहुंचे। मैं समझा कि शायद प्रोग्राम बदल दिया होगा। तीसरे रोज आप वहां तशरीफ ले गये और मकान पर आवाज दी। मेरा मकान बिल्कुल जंगल में था। मैं ने पूछा मेरा मकान बिल्कुल जंगल में है और रात के तीन बजे हैं, आपको बड़ी दिक्कत हुई होगी। फरमाया कि मैं सीधा तुम्हारे ही मकान पर आया हूं और इसी दरवाजे पर आवाज दी है। मालूम होता है- मैं यहां कई मर्तबा आया हूं। दूसरी मर्तबा भी जब मैं लखनऊ था और सख्त बीमार था, तो भी आपने यही फरमाया कि हम सीधे इसी मकान पर आये हैं।

अक्सर आप फरमाया करते थे कि चौबीस घंटे में एक दो मर्तबा अपने सब प्रेमियों के यहां घूम लेता हूं। जैसे उनके गुरूदेव साये की तरह साथ-साथ रहते थे, ऐसे ही आप भी साये की तरह अपने प्रमियों की

देखभाल करते थे। एक मर्तबा भाई साहब डा0 श्रीकृष्णलाल साहब सिकन्दराबाद से चले और शिकोहाबाद आते आते हैजा में सख्त बीमार हो गये और वहां अस्पताल में कर्मचारियों ने दाखिल कर दिया। सुबह जब वहां पहुंचे तो पूछा-अब तबियत कैसी है? कहा कि काफी बेहतर हूँ। सुबह के वक्त आपसे कोई बात करना चाहता था, तो आप टाल देना चाहते थे। जब भाई साहब वहां पहुंचे तो मैं ने सब हाल पूछा। उस वक्त मैं ने यही कहा कि आज सुबह से ही वे कुछ परेशान थे। मालूम होता है कि वे सब आपकी बीमारी की वजह थी।

आपको शराब और जुआ से सख्त नफरत थी। एक मर्तबा दिवाली के रोज अपने भाइयों में से किसी साहब के यहां से आपको बुलावा आया, आप चले गये। वहां पहुंचने पर देखा कि अपने सत्संगी भाई भी अपने रिश्तेदारों की वजह से उसमें शामिल थे। सुबह जब मैं आपके पास गया तो मुंह ढके लेटे थे। माता जी से पता चला कि रात से सुस्त-सुस्त और संजीदा है कि हमारी सोहबत का कोई अच्छा असर उन साहब पर नहीं पड़ा। उनकी ये सोसाइटी छूटी नहीं। जब उन साहब को पता चला तो उसके बाद फिर कभी नहीं छुआ।

आप विधवा विवाह के बहुत माफिक थे। एक सज्जन ने जो न पहले सत्संगी थे और न अब हैं, ये ख्वाहिश जाहिर की और साथ ये भी कहा कि हमारे रिश्तेदार चुपचाप भले ही कहीं शामिल हो जावें। तो आपने अपने ही मकान के कम्पाउन्ड बवउचवनदक से ही, शादी खुद शामिल होकर करा दी। वे दोनों ही प्राणी बहुत खुश हैं और बाल-बच्चेदार हैं।

आपको और मिसालों के साथ एक खास मिसाल जो हम लोगों के सामने गुजरी। एक लड़का जिसका नाम मुन्ना था, जिसको आप हर दिल अजीज कहा करते थे, सख्त बीमार हुआ। हम तीन-चार डाक्टर यहां आये हुए थे और फर्रूखाबाद उसको देखने गये-पूछा तुम्हारी इतनी आमदनी नहीं, दवा का खर्चा किस तरह चल रहा है और रूपया भी देना चाहा। मुन्ना ने रूपये नहीं लिये और कहा-भाई साहब लाला जी महाराज कल इलाज के लिये पचास रूपये दे गये हैं घर आने पर पता चला कि बड़ी सख्ती से अपने ही पास से उस रूपये का इन्तजाम किया गया था।

हमारे एक क्लास-फेलों बसेंमिससवू थे। हम और वो दोनों साथ-साथ पूजा करने आपके पास जाया करते थे। एक रोज वो और मैं दोनों शाम को जा रहे थे। आपके पास मैं सीधा चला गया और वे अपने एक

रिश्तेदार के पास चले गये और जल्द वापस आने को कह गये थे। थोड़ी देर में जब वे आये और पूजा में बैठे तो बुरे ख्यालात आ रहे थे और पूजा में तबियत नहीं लगी और शिकायत की कि आज पूजा में बिल्कुल तबियत नहीं लगी। थोड़ी देर के बाद हम लोग चलने को हुए, तब पूछा-अब क्या हाल है? कहा कि अब तो तबियत खूब लग रही है। चलते वक्त कहने लगे कि हर जगह का खाना मुनासिब नहीं है। रास्ते में मैं ने पूछा-क्या बात थी? तब मालूम हुआ कि उनकी एक नौकरानी कहीं से खाना ले आयी थी और वो उनको खाने को दे दिया था। ये कस्फ की हालत थी कि सामने आते ही ये समझ लिया कि खाना खराब खाया था।

एक मर्तबा मैं कई मील पैदल चलकर जून की धूप में आया। रास्ते में खून के दस्त हो निकले। बड़ा कमजोर था और इस कदर खून की दस्त कि सारे कपड़े नापाक थे। लेकिन मैं ने सोचा कि इन नापाक कपड़ों में आपके सामने नहीं जाऊंगा। खूब नहाया और आहिस्ता-आहिस्ता फिर चला। जैसे ही पैर छूए-पूछा कि इस सख्त धूप में कैसे आये? पैर छूते ही ये मालूम हुआ कि न मालूम मुझको कितनी ताकत आ गयी और सब तकलीफ रफू हो गई। इस प्रेम को अब सिर्फ कहकर सब्र कर लेते हैं, ढुंढने से अब नहीं मिलता।

आपका प्रेम और चाचा जी महाराज के बख्शीश दोनों पुराने भाइयों के दिमाग से नहीं निकल सकती है। वो जमाना ही एक अजीब था। खुद लाला जी महाराज फरमाया करते थे कि मेरी ये छोटी सी छोटी सी जमात अब बड़ी से बड़ी जमायत से मुकाबला परमार्थ में कर सकती हैं। मैं काफी घूमा और सन्त महात्मा भी मिले जो गद्दी नशीन थे। उन लोगों को कहते सुना कि आप लोग हीरा लिये बैठे हैं, और खामोश हैं। जो कुछ नहीं जानते, वो यहां ढोल बजाते आते हैं।

यह भी कहा करते थे कि यहां का तीन दिन का बैठा हुआ शख्स दूसरे का कल्ब जाकिर कर सकता है। हम लोग रात-दिन ऐसा देखते हैं। वाचक ज्ञानी होना और चीज है और प्रेक्टिकल च्तंबजपबंस जीवन और चीज हैं।

आपका भरोसा अपने बुजुर्गों पर इतना जबरदस्त था कि जब लड़कियां शादी के लायक हुई तो कहा करते थे कि मैं तो वर ढूंढ ही रहा हूं, मुझसे ज्यादा फिक्र मेरे बुजुर्गो को है।

जब सत्संगियों की तादात बढ़ने लगी तो आपने फरमाया कि ऐसी छुट्टी रखो कि जिसमें सब लोग एकत्र हो जाया करें। और उस वक्त के लिहाज से ईस्टर की चार रोज की छुट्टी सबसे बेहतर समझी

गई। चुनाचे सन् 1921 में ये तय करके उसी साल से ये भण्डारा शुरू कर दिया।

सन् 1921 में चाचाजी महाराज बहुत सख्त बीमार हो गये और कोई बचने की उम्मीद नजर नहीं आती थी। फिर चाची जी से पूछा कि तुम किसका इलाज चाहती हो और किस पर तुम्हारा विश्वास है? और फौरन ही आपने उन्हीं वैद्य जी जिन पर चाची जी का ख्याल था, इलाज शुरू हुआ। जो हम लोग उस वक्त थे, यही पता चला कि आपने अपनी उम्र का कुछ हिस्सा आपको दे दिया। क्योंकि चाचा जी महाराज ने हमेशा मुझसे यहीं कहा था कि हम पहले जायेगें। जब लाला जी महाराज की वापसी पहले हुई तो मैं ने उनसे पूछा कि यह क्यों, तो जिक्र था कि लाला जी महाराज ने सन् 1921 में सख्त बीमारी की हालत में अपनी उम्र का कुछ हिस्सा उनको ट्रांस्फर जतंदेमित कर दिया था।

हमारे एक दोस्त ने चिट्ठी में लिखा कि आपकी चिट्ठी बहुत दिनों से नहीं आई, मालूम होता है कि आप मुझसे नाखुश हैं। कैसा प्रेम भरा जवाब दिया है जो आपके खतूत में दर्ज है, और आखिर में लिखा है– मैं हूं तुम्हारी आंखों को देखने वाला। ये आपका प्रेम था।

आपका गाना निहायत सुरीला था और फरमाया करते थे कि मेरा गाना रूहानी है, इसलिये इतना रस

है। यहां तक शोहरत हुई कि एक थियेटर कम्पनी ने आपको 200 रूपये महावार आफर किया। आपने इन्कार कर दिया। अलबत्ता सेल्फ-रिस्पेक्ट self rispect के साथ परमार्थ के लिये हमेशा तैयार रहते थे।

एक मरतबा एक डिप्टी क्लेक्टर जिसके अन्डर नदकमत में आप खुद काम करते थे, बुलाय, वो भी परमारथी ख्यालात के थे, चले गये। दूसरी मरतबा बुलाया चले गये। तीसरी मरतबा जब चपरासी बुलाने आया तो हम सब लोग बैठे थे, चपरासी से कहा कि मैं गवैया नहीं हूं। मैं तो इस ख्याल से चला जाता था कि वो परमारथी ख्यालात के हैं। वरना् मैं कोई रोज महफिल की हाजिरी थोड़े ही देता हूं।

शुरू में ये आपका बहुत प्यारा गीत था-

जिन्हें ढूंढां था मैं ने आसमानों में जमीनों में।

वो निकले मेरे जुलमत खानये दिल के मकींनों में।।

इसके कई अस्वार है। इसको खुद भी कहा करते थे और चाचा जी महाराज से भी सुना करते थे। उसके बाद कुछ दिनों ये बहुत रहा-

उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहां जो सोवत है।

जब आप बीमार हुए तो आखिर में सब अपने प्रेमी भाइयों से मिल आये। सिकन्दराबाद से शुरू हुआ फिर

बुलन्दशहर, एटा एक ट्रिप में, दूसरे ट्रिप में कानपुर वगैरह। जब बुलन्दशहर से कार में रवाना हुए तो गैर मामूली तरीके से सब से गले मिले। मुझे उस वक्त हि ख्याल हुआ कि अब दोबारा वापसी नहीं है। कहने लगे, कुछ दिनों नवदिया हमारा ख्याल रहने का है। अगर एक नौकर और दूध का इन्तजाम हो जावे तो खुली हवा में ज्यादा आराम रहेगा। मैं ने कहा कि जल्दी दोनों इन्तजाम कर दिये जावेगें। सो नवदिया में ही आप बस गये। जहां आपकी समाधि आज मौजूद है, वह नवदिया ही है।

अपने गुरूदेव के प्रेम को खूब निभाया। जहां तक मुझे पता लग मिला, जो तारीख आपके गुरूदेव के बिसाल की थी, वही तारीख आपके विसाल की है। और आखिरी भण्डारे में आप ये बहुत पढ़ा करते थे-

''वादा वस्ल चूँ शबद नजदीक।
आतिश शौक तेज वर गदर्द।।''

आप एक भाई का सिक्रेट, दूसरे से कभी जिक्र नहीं करते थे। मेरी भाई साहब से इतनी दोस्ती थी और वो इसको खूब जानते थे। लेकिन फिर भी कभी मेरा सिक्रेट उनसे, और उनका सिक्रेट मुझसे कभी नहीं कहा। हाला कि हम दोनों आपस में खुद डिस्कस कर लेते थे। ये अखलाक था।

आपका जीवन ही सारा प्रेम, सेवा, अखलाक दूसरों की मुसीबतों को बचाने के लिये था। और यही सब बेलौस जीवन इसी से सब सूरतों को बांध रखा था। जहां तक मैं घूमा, इस पैमाने के बुजुर्ग कामयाब बल्कि नायाब और इस विद्या को हंसते-खेलते बख्श देना और यही आपकी मोहब्बत थी। और जब कोई बे-हिम्मती हम भाइयों में से जाहिर करता था तो ये शेर पढ़ा करते थे-

जमाले हमनशीं दर मन असर कर्द।
वरगना मन हआ खाकम न हस्तम।।

आज उस सन्त की बदौलत जहां तक मैं अन्दाजा कर सका, पांच-छह लाख आदमी आज आपका फालोअर विससवूमत चाहे हमारे किसी भाई से ताल्लुक रखता हो, हर जगह मौजूद है। सभी भाई अपने बुजुर्गा के साया सर पर समझकर हिम्मत से काम करते रहे तो उम्मीद है कि उनका नाम और रौशन होगा।

परमात्मा हर तरह से उनकी आत्मा को शान्ति दे और उनका प्रेम हम सब भाइयों को गायबाना अब भी मिलता रहे।

ओम शान्ति! शान्ति! शान्ति!

❑❑❑

अमृत जीवनी एवं उपदेश शतक
परम पूज्य चच्चाजी महाराज
(परमसंत रघुबर दयाल जी)

संसार कभी संतों से खाली नहीं रहता। प्रभु मानव की रक्षा हेतु समय-समय पर इस पथ्वी पर अपने प्रिय भक्तों को संतों के रूप में भेजता है जो आकर भूले-भटको को रास्ता दिखाकर प्रभु की ओर उन्मुख कर देते हैं। यह ईश्वर का अटल नियम है कि वह मनुष्य को कभी न कभी मोक्ष देकर अपने धाम बुला लेता है।

Live of great saints, all reminds us that we can make our life sublime and departing leaves behind us foot-print on the sands of time.

परम पूज्य लाला जी एवं परम पूज्य चच्चा जी महाराज इसी श्रंखला के दो सुगन्धित फूल हैं जिन्होंने अपनी सात्विक सुगन्ध से अपने परिवेश को सुगन्धित किया। उस पराग को उनके पीछे चलने वाले उनके फिदाई मुरीदों ने सारे भारत में फैला दिया। छोटे से शहर में जन्मे दोनों महान आत्माओं ने सांसारिक अभाव में जीवन व्यतीत करते हुए एक सम्पूर्ण परमार्थ का

शक्तिशाली भाव निज जनों में संचरित कर विश्व का कल्याण करने हेतु अपने जीवन को पूर्ण रूप से न्योछावर कर दिया। जिन्होंने उनको देखा, उनकी सोहबत उठाई, उनका प्रेम पाया, वह जौहरी ही उनके जौहर को पूर्ण रूप में रख पाये।

आज हम पाठक जो उनके महान चरित्र को पढ़ रहे हैं, सुन रहे हैं, उनकी समाधियों पर जाकर श्रद्धा-सुमन अपर्ण करते हैं, उन सबको वे दयालु अभी भी अपनी दया बख्श कर रूहानी दौलत से मालामाल कर देते हैं।

यहां परम पूज्य चच्चाजी का संक्षिप्त जीवन चरित्र एवं उपदेश उनके परम पूज्य बड़े भाई तथा मुर्शिदे-कामिल परम संत श्री लाला जी महाराज के साथ-साथ लिखकर पाठकगण को यह बताने का प्रयास कर रहा हूँ कि वह दोनों संत एक ही महान 'परमार्थ सागर' के दो किनारे थे एवं हैं।

परमपूज्य चाचा जी महाराज परमसन्त रघुवर दयाल साहब (कानपुरी) का जन्म 7, अक्टूबर 1875 को फर्रूखाबाद के एक उच्च कायस्थ कुल में हुआ था। आपका निर्वाण 7 जून 1947 को आर्यनगर, कानपुर में हुआ था। आपके तीन पुत्र थे - महात्मा बृज मोहन लाल जी, महात्मा राधा मोहन लाल जी व महात्मा

ज्योतिमोहन लाल जी। आपके तीनो पुत्रों की दीक्षा मौलवी अब्दुल गनी खॉ साहब द्वारा दी गयी थी। इन तीनो महापुरूषों ने अध्यात्म जगत में बहुत काम किया है। आपकी समाधि कानपुर- हमीरपुर रोड पर नौबस्ता थाना के आगे सातवें कि0 मी0 पर नवीन गल्ला मण्डी के बगल में स्थित है। आपकी समाधि पर प्रतिवर्ष बसन्त के दिन भण्डारा हुआ करता है क्योंकि परमपूज्य लाला जी महाराज के जन्म दिवस, जो बसन्त का दिन है, के उपलक्ष में ही आप भण्डारे का आयोजन किया करते थे।

परमपूज्य लाला जी महाराज, परमसन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (फतेहगढ़ी) आपके बड़े भाई व गुरूभाई थे तथा आप दोनो भाइयों की उम्र में केवल दो वर्ष का ही अन्तर था। परमपूज्य मौलवी फज्ल अहमद खॉ साहब, रायपुरी, (हुजूर महाराज) आपके गुरूदेव थे। आपके गुरूदेव ने एक बार पूज्य चाचा जी महाराज से कहा था कि ''मेरे बाद तुम अपने बड़े भाई को मेरी जगह समझना।'' आपने जीवनपर्यन्त अपने गुरूदेव की कही बात का मान रखा। आप पूज्य लाला जी महाराज का बहुत अदब करते थे तथा आपके आदेशों का हुबहू पालन करते थे। आपने अपना जाहिरी व बातिनी स्वरूप, पूज्य लाला जी महाराज की तरह बना

लिया था। आपने अपने गुरू की आज्ञा पालन करके इसी जीवन में स्वयं को अपने मुर्शिद कामिल, परमपूज्य लाला जी महाराज के जीवन काल में उन्हीं की तरह हुबहू बनाकर एक मिशाल कायम कर दिया। परमपूज्य लाला जी महाराज आपसे बहुत खुश रहते थे। आपने स्वयं अपने श्रीमुख से कहा है कि "मुझमें और नन्हें (पूज्य चाचा जी महाराज) में कोई फर्क नहीं है,हम एक तसवीर के दो पहलू हैं, इधर देखोगे तो मुझे पाओगे, उधर देखोगे तो नन्हें को।" परमपूज्य लाला जी महाराज ने अपने श्रीमुख से फरमाया था कि "इस छोटी सी बगिया की जितनी हरियाली देख रहे हो वह सब नन्हें की वजह से है।" आपने पूज्य लाला जी महाराज के हुक्म का पालन जीवन-पर्यन्त किया।आपने अपना सम्पूर्ण जीवन परमार्थ के काम में समर्पित किया था। आप सुबह बैठ जाया करते थे और शाम तक जब तक सत्संगी भाई आते रहते तब तक आप बैठे रहते। किसी को आपने कोई शगल नहीं बताया। आप बैठकर सत्संग कराने के बजाय किस्से कहानियॉ औरों से सुनते और स्वयं सुनाते। आपकी बाते सत्संगी भाई सुनते रहते थे। उनके दिलों के सब विचार बाहर करके आप उसमें प्रेम भर देते थे। इस प्रकार दिल की सफाई करके उसमें ईश्वर प्रेम भर कर सबको मालामाल कर देते थे।

पूज्य चाचा जी महाराज की स्वयं की रियाजत बहुत जबरदस्त थी। घन्टों- घन्टों, रातों - रात ध्यान में मस्त रहते थे। एक बार पूज्य लाला जी महाराज ने कहा कि ''नन्हें! ये चिड़ियाँ मैंने बड़े प्यार से दाना देकर पाली हैं, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी रियाजत देखकर सब भाग जायें।'' आपने उसी समय कहा कि ''श्रीमानजी गलती हो गयी'' और उसी दिन से आपने अपनी तालीम का तरीका ही बदल डाला। वे दीन बनाने, संवारने वाले तथा दुनिया लुटाने वाले महापुरूष थे। आपका व्यक्तित्व चुम्बकीय व बहुत विनोद प्रिय था। एक मुजस्सिम हस्ती थी जो परमार्थ लुटा रहे थे। पूज्य बाबू जी (परमसन्त डा0 श्यामलाल सक्सेना जी, गाजियाबादी) कहा करते थे कि बच्चों जैसा प्यार आप हम सबसे सदा करते थे और हँसी- हँसी में ईश्वर का प्यार भर देते थे।

परमपूज्य चाचा जी महाराज कहा करते थे कि ''अगर दुश्मन भी तुम्हारी गर्दन को कुन्द छुरी से हलाल करे तो भी उसके लिए दुआ करो।'' आप ब्राह्मणों को सदैव पालागन कहा करते थे और फरमाते थे कि ब्राह्मणों की इज्जत करना चाहिए। परमपूज्य चच्चा जी महाराज अपने मान का ख्याल न रखकर हर भाई को पहले स्वयं सलाम कर लिया करते थे। आप फाके करके भी भाइयों की हर सुख सुविधा का ख्याल करते थे।

परमपूज्य चाचा जी महाराज को निम्नलिखित प्रार्थना बहुत पसन्द थी– 'हे परमपिता परमेश्वर! तू मुझपर दया की वृष्टि कर दे क्योंकि मैं सर से पैर तक पाप व गुनाहों से भरा हूॅं। मुझे तेरी ही दया व कृपा का भरोसा है।' परमपूज्य लाला जी महाराज के निर्वाण के बाद उनके कई शिष्य परमपूज्य चाचा जी महाराज के सम्पर्क में जीवनपर्यन्त बने रहे। उनमें पूज्य प्रभु दयाल (पेशकार साहब), पूज्य भवानी शंकर जी साहब, पूज्य श्री श्याम बिहारी लाल जी (पोस्ट मास्टर साहब) मुख्य थे। पंण्डित हरिबंश लाल त्रिपाठी साहब, श्री शिव नरायण दास गान्धी जी व श्री रामनरायण गौड़ साहब आपके प्रिय शिष्यों में से थे।

परमपूज्य चाचा जी महाराज अध्यात्म के गूढ़तम् रहस्यों को बहुत ही सरल भाषा में व्यक्त करते थे। आपके प्रिय शिष्य डा0 प्रकाश चन्द्र वर्मा पुत्र डा0 राम नरायण वर्मा ने 'श्री रघुबर चरितामृत' में आपके सार वचनों को संकलित किया है। उन्हीं सार वचनों में से उपदेश शतक को सत्संगी भाइयों की सेवा में प्रस्तुत किया जा रहा है।

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे।।

हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह आपका महामंत्र है जिसका जाप करने पर आप बहुत जोर देते थे।

ओम शान्ति! शान्ति! शान्ति!

❑❑❑

रघुबर वचनामृत - उपदेश शतक

1. ईश्वर प्रेम रूप है। माता-पिता उतना प्रेम नहीं करते, जितना वह करता है, उसी के प्रेम से अन्य प्राणी प्रेम करते हैं।

2. आँख खुलने पर जगत का दर्शन न करना चाहिए। पहले ईश्वर की याद करनी चाहिए, उसके पीछे आँख खोलें।

3. सुबह दिन निकलने के पहले ही नित्य की पूजा हो जानी चाहिए। इसके पहले और लोग उठे, फरागत पा जाना चाहिये। नहाना-धोना बाद को भी हो सकता है, भजन का समय व्यर्थ न जाये।

4. जो ईश्वर नाम आप ही आप हृदय से उच्चारण हो रहा है, वह ठीक है। जो जुबान से कहा जाता है, वह आकाश से ऊपर नहीं जाता। जो जुबान और ख्याल दोनों से कहा जाता है, वह प्रजापति तक पहुँचता है और जो आत्मा से निकलता है, सीधे ईश्वर तक जाता है।

5. "हे ईश्वर तेरी इच्छा पूरी हो, मेरी कोई इच्छा

नहीं,'' यही एक उत्तम प्रार्थना है और समाधि की पराकाष्ठा है।

6. हे ईश ! आपकी माया को नमस्कार, आप अग्नि ताप से बचाइये।

7. ईश्वर से ईश्वर के सिवा और किसी वस्तु की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

8. दुनिया की हर एक जरूरत को उससे माँगे। मगर अन्त में यह कहे कि मैं यह बा हैसियत इन्सान मॉगता हूँ, तू ही जानता है कि मेरा सच्चा कल्याण किसमें है।

9. ईश्वर की सच्ची प्रार्थना तब उदय होती है, जब मनुष्य सिवा उसके और को नहीं चाहता, न दुनिया, न परलोक। दोनों की अभिलाषा जब हृदय से चली जाती है, तब निर्मल हृदय से प्रार्थना ठीक उठती है। चाह केवल ईश्वर की, किसी और की तलब नहीं रहती।

10. हे नाथ तू ही मेरा ध्येय है, तेरी इच्छा पूर्ण हो, तुझे छोड़ मैं और कुछ न चाहूँ।

11. अकेले में ईश्वर के सामने रोओ, पश्चात्ताप करो और क्षमा प्रार्थना करो। हृदय में किंचित भी मैल न रहने पावे, उनसे प्रार्थना करके साफ कर डालो।

12. जो ईश्वर के नजदीक हृदय से नहीं रोता, प्रार्थना नहीं करता, उसका सही आना कठिन है। कितना भी पूजा पाठ क्यों न करें, विशेषलाभ नहीं होता।

13. सुबह ईश्वर के आगे रोओ। वह तुम्हारे हृदय को मुलायम कर देगा। जब तक सच्चा रोना नहीं आता, भीतर की मलीनता नहीं जाती। क्षण भर के रोने में जो बात होती है, वह वर्षो की पूजा भजन में नहीं होती।

14. चाहे जैसी हालत हो, ईश्वर से गिडगिड़ाता ही रहे कि हे ईश्वर मुझमें अपनी भक्ति उत्पन्न कर दे।

15. भक्ति इसलिए करते हो कि शान्ति प्राप्त हो, सुख मिले और चित्त एकाग्र हो तो अभी ईश्वर को नहीं चाहते। इससे क्या काम, केवल उसकी इच्छा पर संतुष्ट रहो, यह भक्ति का मार्ग है।

16. दुनियाबी कामों में तो समय की काफी पाबन्दी की जाती है। उचित समय से 5 मिनट पहले ही पहुॅचते हैं, परन्तु ईश्वर सम्बन्धी कामों में जब फुरसत मिले तब चेत होता है। कैसी उदासीनता छाई है।

17. राम नाम में जिसने सोच विचार किया वह गया। ईश्वर प्राप्ति के लिये तैयारी न करें, आँख मूँदे चल दे। ईश्वर कृपा से कुछ भी हर्ज न होगा। सब काम आप ही आप सुधर जाते हैं।

18. जो यह कहता है क्या करूँ, मुझसे ऐसा नहीं बन पड़ता है। मैं कमजोर हूँ, मेरी बुद्धि तीव्र नहीं, विवश हूँ। उस आदमी को ईश्वर पर यकीन नहीं। उसने ईश्वर पर भरोसा करना नहीं सीखा। फिर भक्ति की बात ही क्या। ईश्वर के नजदीक सभी बातें मुमकिन हैं, सब कठिनाईयाँ आसान हैं। मर्द वही है जो ईश्वर पर भरोसा करे और हिम्मत रक्खे। उसी को ईश्वर का दीदार होता है।

19. भक्त जन कुछ नहीं चाहते, चक्रों के खोलने और भीतर के चमत्कारों की ओर दृष्टि नहीं करते, केवल ईश्वर को चाहते हैं। सच्ची फकीरी मजहबी बूबारा से मुबर्रा है यानी अन्य चीजों या बातों से अलग। जब तक चक्रों के खुलने वगैरा की तरफ ख्याल है, तब तक अजायब परस्ती है, ईश्वर भक्ति नहीं ।

20. साहिबे तमकीन हमेशा एक रस रहते हैं, चाहे तबियत लगे या न लगे, क्योंकि उनका मकसूद अल्लाह के सिवा कुछ भी नहीं। साहिबे तलबीन-तबियत लग गई तो बहुत खुश वरना गिला करते हैं। चाहिये तो यह कि ईश्वर को इस हाल में धन्यवाद दे कि उसने उस समय यही

उत्तम समझा। यह हालत आई नहीं कि तारीकी (अन्धकार) भी मित्रता करके रोशनी पैदा कर देती है।

21. मैं अपने भक्तों के साथ वैसा ही वर्ताव करता हूँ जैसा अपने विमुखों के साथ अन्त में करूँगा। मेरे भक्त जन दुनिया में सदा तीन तापों से दुखी रहेंगे। (1) शरीर से रोगी (2) दुनिया में अनादर (3) पैसे से दुःखी।

22. जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता है, उसके लिए सचमुच है परन्तु नास्तिकों के लिये वह कुछ भी नहीं।

23. प्रार्थना के पीछे धन्यवाद (शुक्रिया) किया जाता है। हे प्रभु यह अपार दया और कृपा तू ने की है, उससे कभी उऋण नहीं हो सकता।

24. ईश्वर को ईश्वर से ईश्वर के लिए पाओ। ईश्वर साक्षात गुरूदेव जी के रूप में सगुण रूप में विराजमान है। उन्हीं की कृपा से उनका रहस्य खुलता है और प्राप्त होता है।

25. आत्मिक उन्नति में मुख्य बात श्री गुरूदेव से प्रेम की है। जिन्हें उनके दीदार का हर दम शौक बना है, उन्हें सभी कुछ प्राप्त है।

26. जब दिल पर पर्दा पड़ जाता है तब गुरू के सामने जाने में संकोच लगने लगता है। जब ऐसी बात होने लगे तो हिम्मत करके जरूर सामने आवे। कालिमा कट कर रोशनी प्रकट होगी।

27. जब तक निज कृपा नहीं होती, गुरू कृपा और ईश्वर कृपा नहीं होती। जब निज कृपा होती है, तब ईश्वर कृपा उदय होती है और दोनों, गुरू में लय हो जाती है। गुरू किसी शख्सियत का नाम नहीं है जो हृदय के अन्धकार को रोशनी में बदल दे, वही गुरू है। जब चित्त में कोई ख्याल गुरूदेव के खिलाफ न उठे तब सही हालत है।

28. सत्संग में बैठें तो आपा खोकर बैठें, अपने आपको गुरूदेव के हवाले करें।

29. गुरूदेव की अमृतवाणी को मनन करें। हो सके तो लिख भी लें।

30. अपने गुरूदेव की हर आज्ञा में कल्याण की दृष्टि रखें। कभी-कभी उनकी आज्ञा धर्म विरूद्ध भी भासे तब भी जाने कि उसके पर्दे में कोई कल्याण छिपा है।

31. जिस प्रकार शिष्य अपना कर्तव्य पालन करता है, उसी प्रकार गुरूदेव भी अपना। शिष्य का एक मात्र कर्तव्य गुरूदेव की आज्ञा बजाना है। जब वह

ऐसा करता है तब गुरूदेव उसे गुप्त रूप से अनेक आपत्तियों से बचाते हैं। हॉ, पहले शिष्य में इस बात की योग्यता होनी चाहिए कि अक्षरशः गुरूदेव जी के वचनों का पालन करें।

32. जिसको प्रेम नहीं, कुछ भी नहीं। प्रेम गुरू की याददाश्त कायम रखने को कहते हैं। इस तरीके में मेहनत सिर्फ प्रेम को कहते हैं, जैसा प्रेम ज्यादा होगा उतना ही हालत खुद-बखुद बजाय आरजी के असली हो जायेगी। यह कानूने कुदरत है।

33. आपने एक साधन बताया जिससे बन पड़े, करे। वह गुरूमय हो जावे, जो पैर उठे गुरू की याद में उठे, जब तक याद न आवे, उसी हालत में खड़ा रहे। आजमाइश के मौके में जिससे बन गया, वह पार गया। चलनें में गुरूमय हो जावे, मानों गुरूदेव चल रहे हैं। वे ही हैं, हम नहीं। प्रेम की किरणें फूटने लगेंगी।

34. गुरू तो वह है जो नित्य लुटाता रहे। हर क्षण शिष्य में अपना भाव फेंकता रहे। गुरू जब शिष्य को स्थिर दृढ़ देखता है, तब उसमें बस जाता है।

35. सच्चा मुरीद वही है जिसको यह कामिल यकीन हो कि श्री गुरूदेव से मेरा कल्याण हो जायेगा और

उनकी बातों की अक्षरशः पैरवी करे। पीर की बातों में हुज्जत की गुंजाइश नहीं।

36. अपने गुरूदेव के कल्याण की बात सोंचें और उसके लिए ईश से प्रार्थना करें कि (1) हे ईश ! इनका अन्तिम समय ठीक हो, ईमान सलामती से जाए। (2) हे ईश ! इनका रूझान केवल नेकी की ओर हो। (3) हे ईश! इनकी सब शारीरिक व मानसिक जरूरतों को तू पूरा कर दे।

37. गुरू का अति आदर करना मानो उसको बिगाड़ने की चेष्टा करना है। हाँ, उनका आदर हृदय से करो, उनके हुक्म का हृदय से पालन करो। उनके खिलाफ कोई बात तुम्हारे ख्याल तक में न आनी चाहिए।

38. जिस समय अपने गुरूदेव के भावों के विरूद्ध कोई भाव अपने हृदय में उदय हो, उसी समय ईश्वर से प्रार्थना करे, रोवे और माफी मांगे, उसी क्षण वह लुप्त हो जायेगा। यदि तब भी न जाये तो अपने गुरूदेव से कह दें और जवाब का तालिब न हो। वह इनकी ओर प्रार्थना करेंगे, तब भय न रहेगा नहीं तो पतन का भय है।

39. श्री गुरूदेव की इज्जत बेशक ईश्वर के समान करे परन्तु उसको ईश्वर न माने, नहीं तो मूर्ति पूजन

होगा। श्री गुरूदेव के द्वारा ईश्वर की प्राप्ति होती है, इसीलिए उनसे प्रेम करे, ईश्वर से प्रेम हो जावेगा। गुरू में निरन्तर लीन होने से ईश्वर में आप ही आप साधक लीन हो जायेगा। शरीर में न होते हुये भी श्री गुरूदेव बहुत उपकार करते हैं।

40. स्थितप्रज्ञ पुरूष कभी-कभी ऐसे भी कार्य करते हैं जो बाहर से निषिद्ध होते हैं। परन्तु वस्तुतः निर्दोष होते हैं इसलिये उनके विषय में कभी कलुषित बुद्धि न लानी चाहिए। वे जो आज्ञा दे करें, पर उनके काम का अनुकरण कभी न करे क्योंकि हम नहीं जानते कि वह कौन सी बात किस मतलब से कह रहे हैं।

41. हर हाल में खुश रहना चाहिए और जो भी हालत हो, सब उसकी (श्री गुरूदेव) ओर से समझे।

42. जो ईश्वर के लिए व्याकुल होता है, वही उसे पाता है। जो गुरूदेव के दर्शन के लिए व्याकुल होता है, ईश्वर उसे मौका देता है। जो इसकी परवाह नहीं करता है, मन उसे अनेकों कार्यो में व्यस्त रखता है। गुरू वचन वेद वचन है।

43. सब कुछ ईश्वर के भरोसे छोड़कर निर्द्वन्द हो के विराजिए सुन्दर अवस्था उदय होगी।

44. भरोसा किसी पर न करना चाहिए। भरोसा केवल एक ईश्वर का ही उचित है। देवताओं पर भरोसा नहीं। हाँ, उनको जरिया मानों, परन्तु भरोसा ईश्वर पर करो।

45. गुरूदेव की सन्तान की वैसी इज्जत करें जैसी कि गुरूदेव की। जो कुछ भी सेवा बन पड़े करे। गुण–अवगुण न देखे।

46. अपने गुरूदेव से सारा हाल कहना चाहिए। तभी हृदय की मलीनता दूर हो सकती है। अगर जुबानी कहने का मौका न मिले तो लिखकर दे, परन्तु उत्तर न चाहे।

47. भक्तजन प्रायः गुरूदेव को अपने दिल में बसाते हैं। उनकी मूर्ति हृदय में धारण करते हैं। यही है सालोक्य। उनसे ऐसी प्रीत हो जावे कि उनके दिव्य गुण अपने में उतरने लगें, यही है सामीप्य। ऐसा अभेद हो जाए कि भक्त की मूर्ति में और उनकी मूर्ति में बाहरी ऐक्य भी भासने लगे। लोगों को कभी–कभी धोखा भी होने लगे कि यह वही है। दूसरे लोग देख कर उनके गुरूदेव की याद करने लगें, यही है सारूप्य। जब जरा भी अन्तर न रह जाये-गुरूदेव और भक्त में पूर्ण एक भाव आ गया हो तभी वह चौथे पद यानी सायुज्य को प्राप्त करता है।

48. जो शख्स खाना खाने से पहले सारे जगत को ख्याल से रोजी (भोजन) नहीं पहुँचा लेता, पाप का भोजन करता है। वह जानवरों से भी गया गुजरा है।

49. हमारा धर्म नहीं कि स्वाद लेवें। साथ ही यह भी धर्म नहीं कि अरूचिकर पदार्थ को खायें, इसमें अधिक अधर्म है। रूचि और अरूचि से परे होकर प्रसाद खावे। रोम-रोम से धन्यवाद निकले, वह खाना कुछ भी हो, सात्विक है।

50. हर लुक्में के साथ यादे-खुदा हो, उसी के ध्यान में खाओ और गिने हुए लुक्में हो। खाना दाखिल इबादत है।

51. जिस समय मन खाने की ओर चलायमान हो, उस समय प्रार्थना में लग जावे, जब उसका वेग घट जावे और हृदय शान्त हो जावे, तब खाये। ऐसे खाने से जो विष निकलता है, दूर हो जाता है। वह खाना फिर शुद्ध भावों को पैदा करता है। सन्त जन सदैव मन की ओर निगाह रखते हैं।

52. जो प्राणी पैसे की इज्जत नहीं करता, फजूलियात में उसे व्यय करता है, पीछे उसके लिए तरसता है और राम नाम से हाथ धो बैठता है। विचार कर

पैसा खर्च करो, दुःखी जन की जठराग्नि शान्त करो।

53. अपने बीसों नाखूनों की मेहनत की कमाई दूसरों को खिला कर खाये तब राम नाम जल्द आता है।

54. दान देते समय यदि दाहिना हाथ दे तो बायें को खबर न हो। दिल में यह ख्याल न आये कि मैंने उपकार भी किया है और अगर लेने वाला उलट कर गाली दे तो भी उस दिये का ख्याल न आवे।

55. सिनेमा तथा गाने व बजाने की जगहों पर जाने से भक्तजनों के दिल में दाग लगने का भय रहता है।

56. जो लोग अपनी निन्दा करने वाले के वचन से दुःखी न होकर प्रभु के ध्यान में आनन्द मानते हैं, वह स्वयं सुखी होते ही है और व उनको भी हरि सम्मुख करते हैं।

57. कोई विरोधी विचार ठहरने न पावे, आया नहीं कि गया। लहर जैसी आई वैसी वापस गई। कायर पुरूष उनको हृदय में स्थान देते हैं।

58. हाँ जब मन बहुत जोर करे तब उसके साथ लड़ाई न करें, नहीं तो पीछे हमें गहरे गड्ढे में गिरायेगा। प्रार्थना के द्वारा उसे प्रेम से जीतने की कोशिश करनी चाहिए।

59. मन में संकल्प विकल्प आते हैं, आने दो। तुम अपने मार्ग से विचलित न हो, चलते जाओ। उनकी ओर मत ताकों। यह तो मन का स्वभाव ही है। जब तुम मन से विरोध करोगे तो तुम बच नही सकते। झगड़े में पड़ कर अपनी राह खो बैठोगे।

60. जिसने इस राह में कदम रक्खा, वह अपनी जान सलामत न ले गया। यदि उसे पहले चिन्ताएं थीं तो वे अब कम से कम सवाई तो अवश्य हो गई। उस ईश्वर का धन्यवाद है जो ऐसी चिन्ताएं देकर भी अपनी याद करा लेता है। यह दुःख तो सुख का कारण हुआ। चाहिये कि जिन्दगी सब्र और शुक्र के साथ बितायें।

61. मुझसे सब अच्छे हैं, सबके भले में मेरा भला, ऐसी जिनकी धारणा है, वही धन्य है।

62. जो केवल अपने कल्याण के लिय तत्व ज्ञान पाने की चेष्टा करता है, वह मन्दमति है।

63. दूसरों के ऐब खोलना गोया अपने ऐब खोलना है। ईश्वर को यह मन्जूर नहीं है। रजा के कूचे से कभी न हटो।

64. जो साधक बिछौने और खाने-पीने का उचित ख्याल नहीं करता, उसको परम पद पाने में

खटका है। दूसरे के बिछौनों को कभी न लें। दावत में खाना खाने से बचें।

65. जीन, सुजाअत और नखवत तीन बातें है (1) जो कायर हैं-काम से डरते हैं उनमें कायरता है। (2) जो मुनासिब मौका पाकर काम करता है डरता नहीं हर वक्त काम को तैयार रहता है, उसमें सुजाअत (बहादुरी) है (3) जो बिना सोचे विचारे अन्धाधुन्ध काम पर मुस्तैद हो जाता है, नतीजा नहीं सोचता उसमें नखवत (अहंकार) ही बसा है।

66. संतजन दूसरे के अवगुणों को छिपाते हैं, जब ईश्वर उन अवगुणों को छिपाता है तो हमें क्या अधिकार जो उसको खोलें।

67. जिन्होंने ईश्वरीय भेदों को सबके सामने प्रकट किया, वह कृपाधार से वंचित हो जाते हैं। अपने विषय में इष्ट मित्रों को भी सन्देह बना रहे कि मैं भक्त हूँ या ईश्वर का प्यारा हूँ। कभी यह भी इच्छा न करे कि मेरे पास कोई ज्ञान प्राप्त करने आवे, हाँ जो कोई ईश्वर की इच्छा से आ जावे तो उसकी सेवा अपने को भंगी से भी तुच्छ समझ कर करे।

68. ईश्वर के मार्ग में बड़ी सावधानी से चले जब तक गुरूदेव की आज्ञा न हो अपने को जाहिर न करे। अगर बीच में जाहिर हो गया तो ठीक मार्ग पर

आना बहुत कठिन है। ईश्वर ही अपनी दया व कृपा से सम्भाल करे, तो बचत होगी नहीं तो नहीं। दुनिया में मेल मिलाप करना, नाम कमाना और ईश्वर की भक्ति पाना, सब एक साथ मुमकिन नहीं है।

69. बेजरूरत गैर की सोहबत में जाने से हानि होती है। बगैर खुद पुख्ता हुए दूसरे के असर में आने से बच नहीं सकते। हॉ जब जरूरी हो तो जरूर जाये वरना भेद आता है। हर समय यही निकले-हे ईश! जो आप करायें वही ठीक है। उनकी कृपा पर दृष्टि बनी रहे।

70. खाना सोना उनकी याद में हो । इससे बहुत ही शीघ्र उत्तम गति प्राप्त होती है।

71. आँख और जबान को काबू में रखें, बेजा कहीं नजर न जावे, कभी जरूरत से ज्यादा बातें न करें, बस यही धर्म है।

72. इस मार्ग के राही को तो यो चाहिए कि यदि महा कट्टर बैरी उसकी गरदन पर छुरी चलाये तो उसके लिए हृदय से दुआएॅ खैर (कल्याण) की प्रार्थना निकले।

73. गृहस्थी के सभी कार्य विधिवत करो। उन्हें बेगार समझ कर मत भुगतो। वरन यह समझो कि ऐसी

ही प्रभु की आज्ञा है। सब कुछ करते हुए लगन प्रभु की ओर रहे।

74. स्त्री को स्त्री समझना ठीक नहीं, वह तो मित्र है। माता की तरह प्रेम से भोजन देती है, मित्र की भांति सलाह देती है, दासी की भांति सेवा करती है और पत्नी बनकर धर्म की रक्षा करती है।

75. जो अपनी स्त्री को दासी समझता है, वह भक्ति के मार्ग से च्युत होता है, उसे मित्र की दृष्टि से देखे लेकिन यह बात मुँह से न कहे, केवल अमल में लावे। उसके सुधार के लिए मुँह से कुछ न कहें, सिर्फ ईश्वर से प्रार्थना करें।

76. स्त्री ही नर्क और स्वर्ग का दरवाजा है। जिसने उसे सुधार कर अपने मार्ग का साथिन बना लिया, उसी को सच्चा ईश्वर नाम नसीब होगा।

77. सन्तान के बुरे या भले बनने का उत्तरदायित्व पिता पर होता है। क्यों नहीं अपना आचरण ऐसा बनाया जाए कि उसे देख कर सन्तान आप ही आप सुमार्ग पर चलती? शिकायत करना कि सन्तान योग्य नहीं, बेजा है।

78. गृहस्थ को चाहिए कि छदाम से लेकर दो पैसे तक फी रूपया (धमार्थ) अवश्य निकाले। अपने आप खा पी लेना पाप है।

79. छोटे भाई को पुत्रवत प्यार करना चाहिए, यही धर्म है। स्त्री को चाहिए कि वह अपने देवर को अपने लड़के के समान पाले पोसे।

80. बिस्तर पर से सोने के चन्द मिनट पेश्तर मुहासिबा (हिसाबे नफ्स) करना लाजिम है।

81. ध्यान से निरीक्षण करे और एक बात दृढ़तापूर्वक पकड़ ले कि फिर कितनी भी अड़चने आयें उसको न त्यागे। फिर तो सारी बातें आन्तरिक तथा बाह्य से आप ही आप खिंच कर आ जायेगी। अध्यात्म विद्या का तत्व भी समा जायेगा। यही प्रेम का मार्ग है। हर सांस में ईश्वर की याद कायम रहे।

82. अपने नित्य के कर्मों में ईश्वर की याद बनाये रखने की आदत बना लो।

83. बृहस्पति को सन्ध्या समय 15 मिनट अपने आपको गायब कर दो। मौत की याद में महब हो जावो। जगत के सब भाइयों के लिए प्रार्थना करो।

84. ईश्वर प्रेम का यह नशा कभी न उतरे। आपने यह भी फरमाया कि सच्ची मोहब्बत ईश की तभी आती है जब नित्य मृत्यु की याद बनी रहे।

85. तीन काम हैं उनमें से कोई एक करे भक्ति नसीब होगी। (1) जालिम को जुल्म से बचाना

(2) मजलूम (पीड़ित) की फरियाद सुनना (3) भूखों की शिकमशेरी (पेट भरना) करना।

86. जो हरि चर्चा के अतिरिक्त और कुछ बोलता-चालता नहीं, वह मौन व्रत पालन करता है।

87. इन छह जनों की बखशिश नहीं होती (1) सूदखोर (2) गीबत (पीठ पीछे बुराई) करने वाला (3) सामने ऐब खोलने वाला (4) नशा पीने वाला (5) पर स्त्रीगामी (6) केवल अपने लिये धन संचय करने वाला।

88. जैसी वस्तु हो वैसा ही ख्याल में आना ज्ञान है।

89. जब दिल जाकिर हो जावे, अहोभाग्य, बड़े-बड़े महात्मा इसकी इच्छा करते हैं, नहीं पाते।

90. आपने एक सत्संगी को कुण्डलिनी का स्थान प्रत्यक्ष करके दिखलाया। साथ ही यह भी कहा कि उसकी ओर ध्यान न दीजिए। इसका भक्ति से कोई सम्बन्ध नहीं है। चाटक, नाटक से भक्तजन बचते हैं। जब अवसर आता है, आप जागृत होती है या गुरूदेव कृपा करके जागृत करते हैं। मार्ग इसी ओर से जाता है। यहाँ ठहराव का कोई स्थान नहीं है।

91. पहली दृष्टि जो अदर्शनीय वस्तुओं पर पड़ती है निर्दोष ठहराई है। हॉ, द्वितीय दृष्टि पड़ती है तो संस्कार बने बिना नहीं रहता।

92. बीमारी चेतावनी है इससे सावधान होकर विचार करना चाहिये।

93. सन्तजन तीन बातों को मित्र बनाये रखते हैं- (1) बीमारी या किसी किस्म की शारीरिक पीड़ा को बनाये रखते हैं क्योंकि उससे ईश्वर की याद बनी रहती है। (2) मौत की याद हमेशा रखते हैं। मृत्यु को मित्र समझते हैं। (3) हक दरवेशी (फकीरी फर्ज) अदा करते हैं।

94. भक्तों के गुण गाओ। देखो संसार में किस मार्ग से चलकर ईश्वर के पाद पदमों का दर्शन उन्होने किया है। कैसे वे प्रेम के मार्ग पर दृढ़ रहे। बाहरी शास्त्रों के पढ़ने से ईश्वर समीपता नहीं प्राप्त होती है। मनुष्य केवल ढाई अक्षर प्रेम का पढ़ने से पण्डित बनता है।

95. सब आशाओं से मुक्ति ही आसन है।

96. भक्त जन सदा अपने को प्रभु जी की मर्जी के अधीन रखते हैं उन्हें यह परवाह नहीं कि दिल में कैसे विचार आते हैं। हर हालत में खुश रहते हैं और विचार आने के लिए उनके दिल में भला

जगह भी कहाँ है ? जहाँ हरि निवास करते हैं वहाँ माया की तारीकी (अन्धकार) कहाॅ।

97. पूजा के पीछे चन्द मिनट बैठे रहना उचित है।

98. जब-जब अवसर मिले वहदो ही मिनट का क्यों न हो, झट भीतर रूजू होकर उपासना में लग जावे। इस तरह अभ्यास से कभी भी सहज समाधि भंग न होगी और दुनिया के सब काम सुन्दर रीति से पालन होते चले जावेंगे।

99. हृदय के शब्द को निरन्तर उठते-बैठते, खाते-पीते, चलते-फिरते सभी समय कुछ भी करते हो ध्यान में रखें। इसी को जिक्र कहते हैं।

100. ध्यान उचटने का समय आवे नहीं कि नम्रतापूर्वक उनके चरणों में अपने को गिरा हुआ देखे। हे ईश, सब कुछ आपके ही अर्पण करता हूँ। मुझे अपने से अलग न कीजिये। आप मुझे अपनी शरण में रखिये, कभी दूर न कीजिए।

नोट :- जो प्रेमी जन बुजुर्गों की बातों पर अपने जीवन में अमल करेगें, उन पर उनके गुरूदेव तथा बुजुर्गों की कृपा तथा ईश्वर का आशीर्वाद प्राप्त होने में कोई संदेह नहीं।

दो ही तरीके हैं वफा के,
आजमा कर देख लो।
आप बन जाओ किसी के,
या बना कर देख लो।।

ओम शान्ति! शान्ति! शान्ति!

❒❒❒

- गृहस्थ जीवन में रहकर गृहस्थी के सब काम बखूबी करते हुए किसी वक्त भी ईश्वर की याद से खाली न रहे।
- हक हलाल की कमाई का खाना खाएं।
- गैर जिन्स की सोहबत से परहेज करें।
- हर वक्त दुआ करते रहें कि अल्लाह पाक 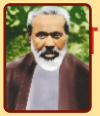 ।

- अपने पीर–मुरशिद का जिक्र हर वक्त करते रहो, यही सबसे बड़ी रियाजत हैं।
- अदब यह है कि हर हाल में खुश रहकर खुदा का शुक्रिया अदा करें।
- बाअदब बानसीब, बेअदब बेनसीब।